Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 12-13

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

23-30 मार्च 2017 ई

23 जमादुस्सानी,1 रजब 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

हमारा ख़ुदा वह ख़ुदा है जो अब भी जीवित है जैसा कि पहले जीवित था

और अब भी वह बोलता है जैसा कि वह पहले बोलता था और अभी भी वह सुनता है जैसा कि पहले सुनता था। यह विचार कच्चा है कि इस ज़माने में वह सुनता तो है मगर बोलता नहीं बल्कि वह सुनता और बोलता भी है। उसकी सभी विशेषताएं सनातन अनन्त हैं। कोई विशेषण भी निलंबित नहीं और न कभी होगा।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"हे सुनने वालो सुनो! कि ख़ुदा तुम से क्या चाहता है। बस यही कि तुम उसी के हो जाओ। इस के साथ किसी को भी साझा न करो। न आकाश में न ज़मीन में। हमारा ख़ुदा वह ख़ुदा है जो अब भी जीवित है जैसा कि पहले जीवित था और अब भी वह बोलता है जैसा कि वह पहले बोलता था और अभी भी वह सुनता है जैसा कि पहले सुनता था। यह विचार कच्चा है कि इस ज़माने में वह सुनता तो है मगर बोलता नहीं बल्कि वह सुनता और बोलता भी है। उसकी सभी विशेषताएं सनातन अनन्त हैं। कोई विशेषण भी निलंबित नहीं और न कभी होगा। वह वही एकमात्र शरिक रहित है जिसका कोई बेटा नहीं और जिसकी कोई पत्नी नहीं। वह वही अनुपमेय है जिसका कोई सानी नहीं और जिस तरह कोई व्यक्ति किसी विशेष विशेषण से निर्दिष्ट की उपासना करें। नहीं। और जिस का कोई सहकर्मी नहीं। जिसका कोई साझा नहीं और जिसकी कोई शक्ति कम नहीं। वह क़रीब है बावजूद दूर होने के, और दूर है बावजूद निकट होने के। वह प्रतिरूप के तौर कशफ़ वालों पर अपने आप को प्रदर्शित कर सकता है, लेकिन इसके लिए न कोई शरीर है और न कोई रूप है और वह शीर्ष पर है, लेकिन यह नहीं कह सकते कि उस के नीचे कोई और भी है और वह अर्श पर है मगर नहीं कह सकते कि पृथ्वी पर नहीं। वह जमा होने वाला है सारी पूर्ण विशेषताओं का और अभिव्यक्ति है सभी सच्ची प्रशंसाओं का और स्रोत है सभी गुणों का और व्यापक है सभी शक्तियों का और आरम्भ है सभी गुणों का और लौटने का स्थान है प्रत्येक चीज़ का और मालिक प्रत्येक देश का और प्रत्येक गुणों से समन्वित है और प्रत्येक पूर्णता से और पवित्र है प्रत्येक दोष कमज़ोरी से और विशिष्ट है इस बात में कि ज़मीन वाले और आकाश वाले उसी की उपासना करें।

(पत्रिका अल्वसिय्यत)

☆ ☆ ☆

123 वां
जलसा सालाना क़ादियान

दिनांक 29, 30, 31 दिसम्बर 2017 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 123 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 29, 30 और 31 दिसम्बर 2017 ई.(जुम्अः, हफता व इतवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का संक्षिप्त इतिहास तथा धार्मिक सेवाऐं (भाग-1)

अनुवादक : शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री, कादियान

हम सब अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मुसलमान और अहमदी हैं। अर्थात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत हैं और जमाअत अहमदिया में शामिल हैं।

जमाअत अहमदिया को अल्लाह तआला ने इस ज़माने में संसार में वास्तविक इस्लाम को फैलाने के लिए स्थापित किया है। इस जमाअत की नींव 1889 में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने रखी थी।

यह जमाअत किस प्रकार स्थापित हुई ? किन किन हालात से गुज़री ? तथा कैसे चमत्कारी ढ़ंग से इस ने उन्नति की ? यह बहुत ही रोचक, अद्भुत तथा ईमान को बढ़ाने वाली घटनाएँ हैं जिनसे जान पड़ता है कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने अपने वादे के अनुसार इस जमाअत को स्थापित किया और फिर हर अवसर पर इसकी सहायता फ़र्माई। विरोधियों ने इसे मिटाने की पूरी कोशिश की पर ख़ुदा तआला ने इसकी सदा रक्षा की तथा इसे हर क्षेत्र में उन्नति पर उन्नति देता चला गया।

इस निबन्ध में हम इन्हीं घटनाओं और हालात का वर्णन करेंगे ताकि अहमदी बच्चे अपनी जमाअत के इतिहास को जान सकें। आशा है कि पाठक पूरी रुचि से तथा ध्यानपूर्वक इन हालात को पढ़ेंगे और इन्हें याद रखेंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के संक्षिप्त ख़ानदानी हालात

जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नाम मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब था। आपके पिता का नाम मिर्ज़ा ग़ुलाम मुरतज़ा साहिब, दादा का नाम मिर्ज़ा अता मुहम्मद साहिब और पड़दादा का नाम मिर्ज़ा गुल मुहम्मद साहिब था। आपकी माता का नाम चिराग़ बीबी साहिबा था।

आप(अ) एक बहुत उच्च मुग़ल ख़ानदान की शाख़ा बरलास से सम्बंध रखते थे। इस ख़ानदान का विशेष लक़ब (उपाधि) मिर्ज़ा है। यही कारण है कि ख़ानदान के सब लोगों के नामों से पहले मिर्ज़ा का शब्द लिखा जाता है। इस ख़ानदान के एक पूर्वज मिर्ज़ा हादी बेग साहिब सोलहवीं शताब्दी ई. (दसवीं शताब्दी हिजरी) के अन्त में बाबर के राज्यकाल में अपने वतन ख़रासान को छोड़ कर लगभग दो सौ आदमियों सहित हिन्दुस्तान में आ गए। तथा दरिया ब्यास के समीप बस गए। यहाँ पर उन्होंने एक गाँव की नींव रखी जिसका नाम इस्लामपुर रखा गया। यह गाँव कुछ समय बाद इस्लामपुर क़ाज़ी माझी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। धीरे-धीरे लोग केवल क़ाज़ी माझी कहने लगे। फिर माझी का शब्द भी उड़ गया तथा क़ाज़ी रह गया। धीरे-धीरे क़ाज़ी से क़ादी बन गया और फिर क़ादी से क़ादियान हो गया।

क़ादियान, लाहौर से उत्तर-पूर्व की ओर सत्तर मील की दूरी पर हिन्दुस्तान के सूबे पूर्वी पंजाब के ज़िला गुरदासपुर में स्थित है। यह, वह पवित्र बस्ती है जहाँ पर जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम पैदा हुए और जहाँ पर आप(अ) ने अपने जीवन का अधिकतर समय व्यतीत किया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ख़ानदान मुग़ल राज्य में बहुत ऊँची पदवियों पर रहा है। जब मुग़लों की हकूमत निर्बल हो गई तो यह ख़ानदान एक स्वतंत्र राज्य के रूप में क़ादियान के आसपास लगभग साठ मील के इलाके पर राज करता रहा। सिक्खों के राज्यकाल में इसकी हालत बहुत निर्बल हो गई। बहुत सा इलाक़ा इसके हाथ से निकल गया। यहाँ तक कि कोई सोलह वर्ष तक इस ख़ानदान को क़ादियान से हिजरत (अपना स्थान छोड़ कर जाना) करके रियासत कपूरथला में शरण लेनी पड़ी। फिर महाराजा रणजीत सिंघ के समय में यह ख़ानदान फिर क़ादियान वापस आ कर बस गया। अंग्रेज़ों के राज्यकाल में इस ख़ानदान की जागीर ज़ब्त कर ली गई परन्तु क़ादियान तथा इसके आसपास के इलाके पर इस का अधिकार रहा।

जन्म तथा प्रारम्भिक शिक्षा

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम 13 फ़रवरी 1835 ई. को जुमा के दिन फ़जर की नमाज़ के समय क़ादियान में पैदा हुए। आप(अ) जुड़वाँ पैदा हुए थे अर्थात आपके साथ एक लड़की भी पैदा हुई थी। जो थोड़े समय के पश्चात मर गई। जब आपकी आयु छ: सात वर्ष की हुई तो एक अध्यापक आपको पढ़ाने के लिए नियुक्त किया गया। जिससे आपने क़ुर्आन मजीद और उस समय के रीति के अनुसार फ़ारसी की कुछ पुस्तकें पढ़ीं। फिर दो अन्य अध्यापकों से आप(अ) फ़ारसी तथा अरबी पढ़ते रहे। चिकित्सा शास्त्र की कुछ पुस्तकें आपने अपने पिताजी से पढ़ीं जो कि बहुत बड़े वैद्य भी थे। इस शिक्षा के परिणाम स्वरूप आपको अरबी तथा फ़ारसी का कुछ प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त हो गया। इससे बढ़ कर आप(अ) ने कोई शिक्षा प्राप्त नहीं की। धार्मिक शिक्षा तो नियमित रूप से किसी अध्यापक से भी प्राप्त नहीं की। हाँ स्वयं धार्मिक पुस्तकें पढ़ते रहते थे। तथा क़ुर्आन मजीद पढ़ने तथा उस पर विचार करने का तो आप को शुरू से ही बहुत शौक़ था।

बचपन की आदतें

हज़रत मिर्ज़ा साहिब का बचपन बहुत ही सादा तथा पवित्र था। एक धनवान ख़ानदान और घराने से सम्बन्ध रखने के बावजूद आपको बेकार खेलें खेलने और समय को नष्ट करने की बिल्कुल आदत नहीं थी। हाँ लाभदायक तथा अच्छी खेलों में आप(अ) ज़रूर भाग लेते थे। आपने बचपन में ही तैरना सीख लिया था। घुड़सवारी में भी आप(अ) अति कुशल थे। आप की सादा, पवित्र तथा नेक आदतों का देखने वालों पर गहरा प्रभाव पज़ता था। एक बार जबकि अभी आप बच्चे ही थे एक बुज़ुर्ग मौलवी ग़ुलाम रसूल साहिब ने जो कि स्वयं भी वलीउल्लाह (ऋषि, मुनि) थे, आपके सिर पर प्रेमपूर्वक हाथ फेरते हुए कहा :-

अगर इस ज़माने में कोई नबी (अवतार) होता तो यह लड़का नबुव्वत के क़ाबिल है। (हयाते तय्यबा, पृष्ठ 14)

नौजवानी का ज़माना, पहला विवाह

जब आपकी आयु पन्द्रह सोलह वर्ष की हुई तो आपकी शादी आपके सगे मामा की पुत्री हुरमत बीबी साहिबा से हो गई। यह आपका पहला विवाह था। इस पत्नी से आपके हाँ दो पुत्र पैदा हुए।

1. हज़रत मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहिब जो उच्च सरकारी पदवियों पर काम करते रहे तथा अन्त में जमाअत अहमदिया में शामिल होने के बाद 1931 में मृत्यु को प्राप्त हुए।

2. मिर्ज़ा फ़ज़ल अहमद साहिब जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में ही मृत्यु पा चुके थे।

विवाह के बाद भी आप समय का अधिकतम भाग एकान्त में भक्ति करने तथा दुआएँ करने में व्यतीत करते थे। आपके पिता जी चाहते थे कि आपको किसी सांसारिक काम में लगाया जाए ताकि आप(अ) संसार में उन्नति कर सकें परन्तु आपको यह बात ज़रा भी पसंद नहीं थी। फिर भी पिता जी की इच्छा पर और उन की आज्ञा का पालन करते हुए आप ज़मीनों के लिए मुक़द्दमों के काम के लिए जाते रहे। तथा 1864 के लगभग आपने सियालकोट में जाकर चार वर्ष तक सरकारी नौकरी भी की। परन्तु आपका मन इस नौकरी में बिल्कुल नहीं लगता था। और फ़ालतू समय का अधिकांश भाग आप क़ुर्आन मजीद पढ़ने, भक्ति करने और या फिर ईसाइयों के साथ इस्लाम की सच्चाई बारे बहस करने में व्यतीत करते थे।

माता का देहान्त

1868 ई. में आप(अ) अपने पिता जी के आदेश पर सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देकर क़ादियान लौट आए। इसी वर्ष आपकी माता का देहान्त हो गया। इस दु:ख को आपने बहुत सब्र के साथ सहन किया।

एक इल्हाम

1868 ई. या 1869 ई. की बात है एक आदमी हज़ूर को मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी के साथ बहस करने के लिए ले गया। मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब मुसलमानों के उस फ़िर्के (दल) से थे जिसे अहले हदीस कहते हैं। उन दिनों इस फ़िर्के का बहुत विरोध किया जा रहा था। जो आदमी आपको ले गया था उसकी इच्छा थी कि आप(अ) जा कर उनके सिद्धान्तों को ग़लत साबित करें। परन्तु जब आपने मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब से उन का सिद्धान्त पूछा और उस सिद्धान्त को इस्लाम के अनुसार पाया तो आपने बहस करने या मुक़ाबला करने की बजाए भरे जन समुदाय में यह कह दिया कि यह अक़ीदा तो बिल्कुल ठीक है मैं इस पर

शेष पृष्ठ 10 पर

ख़ुत्बः जुमअः

20 फरवरी का दिन मुस्लेह मौऊद की भविष्यवाणी के हवाले से जाना जाता है यह एक बड़ी भव्य भविष्यवाणी है जिस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक महान बेटे के जन्म की ख़बर दी गई जिसके असंख्य गुण बयान किए गए हैं। जिसकी दीर्घायु पाने की खबर भी थी और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा स्थापित जमाअत की मुस्लेह मौऊद के दौर में असाधारण तरक्की की भी भविष्यवाणी थी और जमाअत अहमदिया का इतिहास गवाह है कि हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद अल्मुस्लेह अल्मौऊद के 52 वर्षीय खिलाफ़त में इस भविष्यवाणी के सभी अंश सम्पूर्ण रूप से पूरे हुए। एक न्यायपूर्ण के लिए, एक रूहानी देखने वाली आंख रखने वाले के लिए यही एक भविष्यवाणी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रामाणिकता की बहुत बड़ी दलील है।

भवष्यिवाणी के शब्द "रूह हक़" से सम्मानित होने के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह के कुछ उद्धरणों की रौशनी में ईमान वर्धक विस्तार का वर्णन।

अगले दिनों में जमाअतों में इस भविष्यवाणी के बारे में जलसे भी होंगे। जमाअत के लोगों को इन में अधिक से अधिक शामिल होना चाहिए। एम टी ए पर भी प्रोग्राम आ रहे हैं इन्हें भी सुनना चाहिए ताकि इस भविष्यवाणी की गहराई में ज्ञान भी हो। इस भविष्यवाणी में असंख्य निशान हैं और बड़ी शान से वह सभी निशान हैं हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो में पूरे हुए हैं।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 17 फरवरी 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

जैसा कि हम जानते हैं कि 20 फरवरी का दिन मुस्लेह मौऊद की भविष्यवाणी के हवाले से जाना जाता है यह एक बड़ी भव्य भविष्यवाणी है जिस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक महान बेटे के जन्म की ख़बर दी गई जिसके असंख्य गुण बयान किए गए हैं। जिसकी दीर्घायु पाने की खबर भी थी और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा स्थापित जमाअत की मुस्लेह मौऊद के दौर में असाधारण तरक्की की भविष्यवाणी भी थी। और जमाअत अहमदिया का इतिहास गवाह है कि हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद अल्मुस्लेह अल्मौऊद के 52 वर्षीय खिलाफ़त में इस भविष्यवाणी के सभी अंश सम्पूर्ण रूप से पूरे हुए। एक न्यायपूर्ण के लिए, एक रूहानी देखने वाली आंख रखने वाले के लिए यही एक भविष्यवाणी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रामाणिकता की बहुत बड़ी दलील है।

तीन दिन बाद 20 फरवरी आने वाली है। आज इस संबंध में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो के अपने शब्दों में उल्लिखित कुछ अंश प्रस्तुत करूँगा जो रोए अधिकार मुशर्रफ के हवाले से आप की हस्ती में भविष्यवाणी पूरे होने पर प्रकाश डालते हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो को 1914 ई में अल्लाह तआला ने ख़िलाफत के पद पर आसीन किया। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद की समस्त बातें पूरी होती नज़र आती थीं, और जमाअत के उलमा और अधिकतर जमाअत यह समझती थी कि आप ही मुस्लेह मौऊद हैं लेकिन हज़रत मुस्लेह मौऊद ने खुद इस बात की घोषणा न की यहाँ तक कि 1944 ई का साल था। अर्थात आपकी ख़िलाफत के तीस साल पूरे हो गए। इसके बाद आप ने अपनी एक रोया के आधार पर घोषणा की कि मैं ही मुस्लेह मौऊद हूँ। यह भी फरमाया कि मेरी तबीयत के लिहाज़ से यह मुझ पर बड़ा बोझ है कि यह घोषणा करूं और रोया का हवाला भी विस्तार से बयान करूं। बल्कि आप ने भी कई जगह फरमाया है कि अपनी तबियत के मामले में मैं अपनी रउया और इलहामों को बताने में झिझक महसूस करता हूँ लेकिन कुछ परिस्थितियों के कारण कुछ बताने भी पड़ते हैं। बहरहाल आपको पहले भी जमाअत के लोगों की तरफ से उल्मा की तरफ से कहा जाता था कि आप घोषणा करें कि आप मुस्लेह मौऊद हैं लेकिन आप यही फरमाते रहे कि घोषणा की ज़रूरत नहीं। अगर मैं मुस्लेह मौऊद हूँ और भविष्यवाणी मुझ पर पूरी हो रही है तो ठीक है किसी दावे की क्या ज़रूरत है। लोगों को जवाब देते हुए आप ने एक बार यह भी फरमाया कि मुसलमानों में मुजद्दिदों की जो सूची हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दिखाने के बाद प्रकाशित हुई है उन में से कितने हैं जिन्होंने दावा किया हो। आप फरमाते हैं कि मैंने ख़ुद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सुना है कि मुझे तो औरंगज़ेब भी अपने समय का मुजद्दिद दिखाई देता है मगर क्या उसने कोई दावा किया है? उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को मुजद्दिद कहा जाता है उनका कोई दावा है? अत: आप फरमाते हैं कि इसलिए ग़ैर मामूर का दावा आवश्यक नहीं। दावा केवल मामूरीन से संबंधित पेशगोइयों के लिए आवश्यक है। ग़ैर मामूर का सिर्फ काम देखना चाहिए। अगर काम पूरा होता नज़र आ जाए तो फिर इसे दावे की क्या ज़रूरत है। इस मामले में तो वह इनकार भी करता जाए तो हम कहेंगे कि वही इस भविष्यवाणी के मिसदाक़ है। अगर उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ मुजद्दिद होने से इनकार भी करते तो हम कह सकते थे कि वह अपने समय के मुजद्दिद हैं क्योंकि मुजद्दिद के लिए किसी दावा की ज़रूरत नहीं। दावा केवल उन मुजद्दिदों के लिए आवश्यक है जो मामूर हों। हां जो ग़ैर मामूर अपने युग में गिरते हुए इस्लाम को खड़ा करे, दुश्मन के हमलों को तोड़ दे उसे चाहे पता भी न हो हम कह सकते हैं कि वह मुजद्दिद है। हां मामूर मुजद्दिद वही हो सकता है जो दावा करे जैसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किया।

आप फरमाते हैं अत: मेरे तरफ से मुस्लेह मौऊद होने के दावे की कोई ज़रूरत नहीं और विरोधियों की ऐसी बातों से हमें घबराहट की कोई आवश्यकता नहीं। इसमें कोई अपमान की बात नहीं। मूल सम्मान वही होता है जो ख़ुदा तआला से मिलता है चाहे दुनिया की नज़रों में इंसान अपमानित समझा जाए। अगर वह ख़ुदा तआला के मार्ग पर चले तो उसकी दरगाह में वह निश्चित रूप से सम्मानित किया जाएगा और अगर कोई व्यक्ति झूठ से काम ले तो अपने ग़लत दावे को साबित कर दे और अपनी फुर्ती या चालाकी से लोगों में प्रभुत्व प्राप्त कर ले तो ख़ुदा तआला की दरगाह में वह सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता और जिसे ख़ुदा तआला के दरबार में सम्मान नहीं मिलता है वह चाहे बाहरी मामले में कितना सम्मानित क्यों न समझा जाए उसने कुछ खोया ही है, प्राप्त नहीं किया और अन्त एक दिन वह अपमानित हो कर रहेगा।

आप फरमाते हैं कि अत: धार्मिक व दुनियावी कामों में हमेशा सच को धारण करो। आपने फरमाया कि जो व्यक्ति ख़ुदा के लिए नुकसान उठाता है वह दरअसल लाभ में रहता है। तो एक सैद्धांतिक बात भी इस संबंध में आप ने बयान फ़रमा दी कि जिस सच्चाई के साथ ख़ुदा तआला है, जिस को अल्लाह तआला सच्चा समझता है वह अल्लाह तआला की कार्यात्मक गवाही से भी प्रकट हो जाता है। ज़रूरी नहीं है कि इसके लिए दावा या घोषणा की जाए। हां अगर अल्लाह तआला चाहे कि घोषणा हो तो इसकी घोषणा भी हो जाती है। तो अगर किसी को परखना है कि वह ख़ुदा तआला की इच्छा के अनुसार काम कर रहा है या अल्लाह तआला की ओर से है तो फिर उसे ख़ुदा तआला के समर्थन के हवाले से परखना चाहिए लेकिन बहरहाल

जैसा कि मैंने बताया था जब अल्लाह तआला ने आप को कहा कि दावा करें तो आप ने भी घोषणा कर दी कि मुझे अल्लाह तआला ने अब स्पष्ट कर दिया है और अब मैं घोषणा करता हूं कि मैं ही भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद का पूरा करने वाला हूँ। इस घोषणा से जहां एक ओर तो जमाअत के लोग ख़ुश थे वहां ग़ैर मुबाईन जो थे उन्होंने आपत्ति भी शुरू कर दी। अत: 1945 ई के जलसा सालाना के दूसरे दिन 27 तारीख़ की तकरीर में आप ने उस का उल्लेख करते हुए विशेष रूप से मौलवी मुहम्मद अली साहिब के बयान के बारे में उल्लेख किया।

आप फरमाते हैं कि "जब से मैंने मुस्लेह मौऊद होने की घोषणा की मौलवी मुहम्मद अली साहिब ने वैसे ही आरोप करने शुरू कर दिए हैं जैसे मौलवी सना उल्लाह साहिब करते थे। मैं ख़वाब या इल्हाम सुनाता हूँ और अल्लाह तआला की घोषणा के आधार पर घोषणा करता हूँ लेकिन मौलवी मुहम्मद अली साहिब न तो प्रतिद्वंद्वी पर कोई ख़वाब या इल्हाम प्रस्तुत करते हैं और न ही वह पेशकश कर सकते हैं क्योंकि वह सारा ज़ोर लगा कर तीस साल पुराना अपना एक इल्हाम प्रस्तुत कर सके हैं। मगर वह भी घटनाओं की दृष्टि से ग़लत निकला। इसलिए जब इल्हाम हुआ ही नहीं तो इल्हाम प्रस्तुत कैसे करें। अब केवल ऐतराज़ों के उनके पास कोई बात नहीं अगर वह आरोप भी न करें तो मुकाबला कैसे करें। हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा के दुश्मन इस बात का तो इनकार नहीं कर सकते थे कि इल्हाम होता ही नहीं क्योंकि उनसे पहले नबियों को इल्हाम होता था और वे इस बात को मानने वाले थे। इसलिए उन नबियों के इनकार करने वाले इस बात से इनकार न कर सकते थे कि इल्हाम कोई चीज़ नहीं है। अपनी बात को सही साबित करने के लिए और नबियों का मुकाबला करने के लिए कहते थे कि उनके इल्हाम स्वयंभू हैं। इसी तरह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दुश्मनों ने भी यही कहा कि उन के इल्हाम स्वयंभू हैं। अगर ईसाइयों और यहूदियों का यह कथन सही था कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इल्हाम नऊज़ो बिल्लाह स्वयंभू थे और अल्लाह तआला की ग़ैरत की मांग यह थी कि वह उन्हें नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाबिल में इल्हाम कर देता तो झूठों की कलई खुल जाती।(और स्पष्ट हो जाता) लेकिन अल्लाह तआला का उन्हें इल्हाम से वंचित रखना बताता है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही सच्चाई पर थे और आप के दुश्मन यहूदी और ईसाई ग़लत थे। इसी तरह आज मौलवी मुहम्मद अली साहिब कहते हैं कि मेरे इल्हाम झूठे हैं लेकिन क्यों अल्लाह तआला उन्हें मेरे विरोद्ध में सच्चे इल्हाम नहीं कर देता ताकि दुनिया में स्पष्ट हो जाए कि मौलवी साहिब सही हैं और मैं ग़लती पर हूँ।"

आप फरमाते हैं कि "आश्चर्य की बात है कि एक व्यक्ति दिन रात अल्लाह तआला की सृष्टि को गुमराह करे और दिन रात उसके बन्दों को धोखा और चतुराई से ग़लत रास्ते की ओर ले जाए लेकिन फिर भी अल्लाह तआला को ग़ैरत न आए। यदि अल्लाह तआला को ग़ैरत नहीं आती, तो इस का कारण सिवाय इसके कि और कोई नहीं कि अल्लाह तआला जानता है कि मौलवी साहिब उसकी निकटता से बहुत दूर हैं इसलिए अल्लाह तआला ने उन्हें इल्हाम नहीं किया। अत: सच्चाई के मुकाबला पर आरम्भ से इनकार होता रहा है। यह सिलसिला शुरु से चलता आया है और चलता चला जाएगा। (अन्वारुल उलूम जिल्द नम्बर 240-241) अर्थात विरोधियों का। सच्चाई के मुकाबला पर।

अत: आपत्ति करने आरोप तो हमेशा करते चले आए हैं लेकिन इसे अस्वीकार करने के लिए के लिए मुकाबला में कुछ भी प्रस्तुत नहीं करते और न ही अल्लाह तआला को गवाह बनाकर कर सकते हैं कि हम अल्लाह तआला को गवाह बनाकर अपने इल्हाम या ख़ुवाबें या रोया प्रस्तुत करते हैं क्योंकि उन्हें पता है कि पकड़ होगी।

अब मैं हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो के कुछ इलहाम और कश्फ रोया का उल्लेख करता हूँ जो आपने अपने मुस्लेह मौऊद होने की घोषणा के मौके पर वर्णन किए थे। आप फरमाते हैं कि

"सब से पहली बात जो इस पद की ओर इशारा करती है वह मेरा एक इल्हाम है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी में मुझे हुआ और मैंने जाकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बता दिया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसे अपने इलहामों की कॉपी में लिख लिया। वह इल्हाम मैंने कई बार सुनाया है। (आप लोगों को बता रहे हैं।) पहले मैं उसे केवल ख़िलाफत के बारे समझता था लेकिन अब मेरा दिमाग़ इस ओर गया है कि इल्हाम मेरे इस पद की तरफ था जो अल्लाह तआला ने मुझे मिलने वाला था। वह इल्हाम था कि

اِنَّ الَّذِیۡنَ اتَّبَعُوۡکَ فَوۡقَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡۤا اِلٰی یَوۡمِ الۡقِیٰمَۃِ

बेशक अल्लाह तआला तेरे मानने वालों को तेरा इंकार करने वालों पर क़यामत तक प्रभुत्व देगा। आप फरमाते हैं कि यह एक सूक्ष्म संकेत है बहुत बारीक संकेत है जो भविष्यवाणी के पूरा होने की ओर इशारा करता है और वह यह कि वह इल्हाम यह वह इल्हाम है जो हज़रत मसीह नासरी को हुआ और जिसका कुरआन में उल्लेख आता है मगर वहाँ यह शब्द हैं। وَ جَاعِلُ الَّذِیۡنَ اتَّبَعُوۡکَ فَوۡقَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡۤا اِلٰی یَوۡمِ الۡقِیٰمَۃِ (सूर: आले इम्रान 56) और यहाँ यह इल्हाम है कि इन اِنَّ الَّذِیۡنَ اتَّبَعُوۡکَ فَوۡقَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا اِلٰی یَوۡمِ الۡقِیٰمَۃِ इसका कारण यह है कि हज़रत मसीह नासरी का दावा मूसवी सिलसिला की अंतिम नबुव्वत का था और इस प्रकार के दावे के बारे में पहले लोगों का विरोध ज़रूरी होता है। फिर एक लंबे समय के बाद वह नबी पर विश्वास करते हैं लेकिन मुस्लेह मौऊद की भविष्यवाणी का एलान करने वाले को चूंकि अल्लाह तआला पहले ख़लीफा बनाना चाहता था और ख़लीफा को तुरंत बनी बनाई जमाअत मिल जाती है इसलिए यहां "जा अल्लज़ीन" वाले हिस्सा की ज़रूरत नहीं थी। हज़रत मसीह के पद वाला नबी तो जब भी लोगों के सामने अपना दावा पेश करता है लोग उसे सुनते ही कहने लग जाते हैं कि झूठा झूठा। कोई अबू बकर जैसे गुण रखने वाला आदमी हो और उसने मान लिया तो यह अलग बात है वरना आम तौर पर ऐसा नबी जब अपनी नबुव्वत की घोषणा करता है तो सारी दुनिया उसे झूठा करार देने लग जाती है। ख़ुद नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर शुरुआत में केवल तीन लोग ईमान लाए लेकिन ख़लीफा को पहले दिन ही एक जमाअत मानती है। अत: اِنَّ الَّذِیۡنَ اتَّبَعُوۡکَ فَوۡقَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡۤا اِلٰی یَوۡمِ الۡقِیٰمَۃِ कह कर अल्लाह तआला ने इस तरफ इशारा फरमाया था कि अल्लाह तआला तुम्हें एक दिन बनी बनाई जमाअत दे देगा और फिर इस जमाअत का संबंध तुम्हारे साथ मज़बूत करता चला जाएगा यहां तक कि एक दिन वह तुम्हारी जमाअत प्रतीक रूप में कहलाएगी और कुछ लोग तुम्हारे विरोधी भी होंगे मगर तुम्हारी बैअत करने वालों को अल्लाह तआला क़यामत तक तुम्हारे इंकार करने वालों पर विजयी रखेगा और यह विजय तुम्हारे इमाम बनते ही शुरू हो जाएगी और "जा अल्लज़ीनत्तबऊक" वाले हिस्से की ज़रूरत नहीं होगी कि तुम इंतज़ार करो कि लोग कब ईमान लाते हैं या अक्सर लोग विरोद्ध करें फतवे लगाएँ उपहास करें। तिरस्कार और अपमान की कोशिश करें मिटाने और बर्बाद करने के उपाय करें और दुनिया के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक विरोध के तूफान उमड़ आए बल्कि अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बनी बनाई जमाअत के अक्सर हिस्सा को तेरे हवाले कर देगा (अर्थात मुस्लेह मौऊद को) और जिस दिन यह जमाअत तेरे सुपुर्द होगी उसी दिन से तुझे मानने वालों का तेरे विरोधियों पर विजय शुरू हो जाएगी।

आप फरमाते हैं" अत: देख लो ऐसा ही हुआ। हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सलाम की जमाअत को तो तीन सौ साल के बाद विजय हुई लेकिन यहां अल्लाह तआला ने जिस समय ख़िलाफत के पद पर मुझे खड़ा किया इसके कुछ सप्ताह के भीतर ही जो लोग मेरे मुकाबला पर खड़े हुए थे और मेरे पद का इनकार करने वाले थे अर्थात पैग़ामी, अल्लाह तआला ने उन पर मुझे और मेरे साथियों को विजय देना शुरू कर दिया और प्रभुत्व ख़ुदा तआला की कृपा से दिन प्रतिदिन बढ़ता चला जा रहा है। पैग़ामी आज कह रहे हैं एक ख़वाब पर भरोसा किया गया।" (अर्थात वह रोया जिसके आधार पर आपने मुस्लेह मौऊद होने की घोषणा की थी। उस पर भरोसा करके आप कहते हैं कि मुस्लेह मौऊद हैं। आप फरमाते हैं कि "हालांकि वे भी ख़वाब नहीं क्योंकि इसमें शब्द हैं मगर यह इल्हाम जो मैंने ऊपर लिखा है यह तो इल्हाम है और चालीस वर्ष पुराना है। अल्लाह तआला ने ख़बर दी कि मैं एक जमाअत का इमाम हूँगा। कुछ हिस्सा मेरा विरोध करेगा अक्सर मेरे साथ जाएंगे और उन्हें अल्लाह तआला क़यामत तक दूसरों पर विजय देगा (जो खिलाफत के साथ जुड़े रहेंगे।) यह जो फरमाया कि तेरे मानने वालों को तेरे इन्कार करने वालों पर अल्लाह तआला क़यामत तक विजय देगा इस में इसी तरफ संकेत है कि अल्लाह तआला एक दिन मुझे प्रतिरूप रूप में नबियों का मसीह नासरी और मसीह मुहम्मद का नाम देने वाला है क्योंकि ख़लीफा की जमाअत उसकी ज़िन्दगी तक होती है। मृत्यु के बाद ही नबियों की जमाअत या उनके प्रतिरूपों की जमाअत चलती है। इसी तरह "कफरू" के शब्द ने भी इस ओर इशारा किया है कि ख़िलाफत के बाद मुझे एक और पद मिलने वाला है जो कुछ नबियों के प्रतिरूप के रूप में होगा। सुब्हान अल्लाह ला युस्अलो अम्मा यफअलो।

(ख़ुत्बाते महमूद भाग 25 पृष्ठ 87-89)

फिर आप फरमाते हैं कि "दूसरे मुझे कशफ़ हुआ जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी में ही मैंने देखा था वह भी इसी स्थान की ओर इशारा करता है। मैंने देखा कि मैं उस कमरे से निकल रहा हूँ जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम रहते थे और बाहर आंगन में आया हूँ तो वहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पधारे हैं। उस समय कोई व्यक्ति यह कहकर मुझे एक पार्सल दे गया है कि यह कुछ तुम्हारे लिए है और कुछ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए है। कशफी अवस्था में जब मैं उस पार्सल पर लिखा पता देखता हूं तो वहां भी मुझे दो नाम लिखे हुए नज़र आते हैं और पता इस तरह दर्ज है कि मोहिउद्दीन और मोइनुद्दीन को मिले। आप फरमाते हैं कि "मैं कशफ में समझता हूँ कि उनमें से एक नाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का है और दूसरा नाम मेरा है। उस समय चूंकि मैं बच्चा था और हज़रत मोहिउद्दीन साहिब इब्ने अरबी का नाम सुना हुआ नहीं था केवल औरंगज़ेब के बारे में जानता था कि उनका नाम मोहिउद्दीन था। इसलिए मैंने उस समय माना कि मोहिउद्दीन से अभिप्राय में हूँ और हज़रत मोइनुद्दीन चिश्ती चूंकि भारत में एक प्रसिद्ध बुज़ुर्ग गुज़रे हैं इसलिए मैंने समझा कि मुईनुद्दीन से अभिप्राय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हैं लेकिन बाद में मुझे पता चला कि हज़रत मोहिउद्दीन साहिब इब्ने अरबी भी एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग हुए हैं तो मैंने समझा कि मोहिउद्दीन से मुराद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हैं जिन्होंने धर्म को पुनर्जीवित किया और मोइनुद्दीन से मुराद मैं हूँ जिस ने धर्म की सहायता की। इसलिए धर्म को जीवित करने वाले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हैं और धर्म की सहायता और समर्थन करने वाला मैं हूँ जैसे माँ बच्चे पैदा करती है और दाई दूध पिलाती है।"

(ख़ुत्बाते महमूद जिल्द 25 पृष्ठ 89-90)

फिर तीसरा उल्लेख करते हुए आप फरमाते हैं कि "तीसरा इल्हाम जो मुझे इसी रंग में हुआ लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफात के बाद। वह यह है कि اِعۡمَلُوۡۤا اٰلَ دَاوٗدَ شُکۡرًا (सबा 14) कि हे आले दाऊद तुम अल्लाह तआला के शुक्र के साथ उसकी आज्ञाओं का पालन करो। इस इल्हाम के माध्यम से "इअमलू" कह कर अल्लाह तआला ने हमें अपनी इच्छा पर पूरी तरह पालन करने का आदेश दिया है और आले दाऊद कह कर अल्लाह तआला ने मुझे हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम से सदृशता दी है। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के बाद ख़लीफा हुए थे और उनके बेटे भी थे।

आप फरमाते हैं "मुझे याद है तो यह इल्हाम इतने ज़ोर से हुआ कि कितनी देर तक मुझे यह इल्हाम के अवतरित होने की स्थिति ताज़ा रही और यह इल्हाम इतना स्पष्ट था कि बावजूद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उस समय वफात पा चुके थे जब मैं अपने कुछ हम उम्रों से सैर में यह उल्लेख कर रहा था (तो) अचानक मेरे दिमाग़ से आप की वफात का विचार निकल गया और मुझे जोश पैदा हुआ कि मैं दौड़कर जाऊँ और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जाकर उसका उल्लेख करूं।"

(ख़ुत्बाते महमूद जिल्द 25 पृष्ठ 90)

फिर आप फरमाते हैं कि "चौथी गवाही इस रोया की सत्यता (जो रोया अल्लाह तआला ने मुस्लेह मौऊद होने की दिखाई) मेरा यह कशफ़ है कि मैंने देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बैतुद्दुआ में बैठा दुआ कर रहा हूँ कि अचानक मुझ पर प्रकट किया गया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इब्राहीम थे। फिर ख़ुदा तआला ने मुझ पर प्रदर्शित किया गया कि इस उम्मत में और भी कई इब्राहीम हुए हैं अत: हज़रत ख़लीफा अव्वल के बारे में बताया गया कि आप भी इब्राहीम हैं और आपका नाम मुझे इब्राहीम अदहम बताया गया। अदहम एक राजा था जो राज्य को छोड़कर तसव्वुफ की ओर आकर्षित हो गए थे। तो मुझे बताया गया कि हज़रत ख़लीफा अव्वल इब्राहीम अदहम हैं फिर मुझे बताया गया कि एक इब्राहीम तुम भी हो।"

(ख़ुत्बाते महमूद जिल्द 25 पृष्ठ 90)

फिर पांचवीं गवाही का ज़िक्र करते हुए फरमाते हैं कि "पांचवीं गवाही जो इस बारे में ख़ुदा तआला से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफात के क़रीब मुझे मिली यह है कि मैंने एक बार रोया में देखा कि एक घंटी बजी और उसकी आवाज़ ऐसी है जैसे पीतल का कोई कटोरा हो और उसे किसी चीज़ से ठकोरें तो उसमें से टन की आवाज़ उत्पन्न होती है घंटी से भी टन की आवाज़ आई मगर वह आवाज़ ऐसी सुरीली और सूक्ष्म है कि ऐसा मालूम होता है कि सारे जहान के संगीत का सुख उस में भर दिया गया है। यह आवाज़ बढ़ती गई बढ़ती गई यहाँ तक कि सारे ब्रह्माण्ड में रूप धारण कर के एक फ्रेम बन गई। (आसमान में फैल गई वातावरण में फैल गई और एक फ्रेम के रूप में आ गई।) जैसे फोटो फ्रेम होता है। फिर मैंने देखा कि इस फ्रेम में एक तस्वीर दिखाई गई जो एक बहुत ही हसीन और सुंदर अस्तित्व है। फिर वह तस्वीर हलनी शुरू हुई और थोड़ी देर के बाद अचानक उसमें से कूद कर एक वजूद मेरे सामने आ गया जिसके बारे में मुझे लगता है कि वह ख़ुदा का फरिश्ता है और उसने मुझे कहा कि आओ मैं तुम्हें सूरे फातिहा का दर्स दूं। अत: उसने मुझे सूरे फातिहा का दर्स देना शुरु कर दिया और देता गया, देता गया, देता गया यहां तक वह "इय्याक नअबोदो व इय्याक नसतईन" की तफसीर शुरू करने लगा तो कहने लगा कि आज तक जितने मुफ़स्सिर हुए हैं उन सब ने "मालिके यौमिद्दीन" तक तफसीर लिखी है लेकिन आप को इसके आगे भी तफसीर बताता हूँ अत: उसने सारी सूरे फातिहा की तफसीर मुझे पढ़ा दी। जब मेरी आँख खुली तो रोया में उस फरिशते ने जो बातें मुझे बताई थीं उनमें से कुछ बातें मुझे याद थीं लेकिन मैंने उन्हें नोट न किया और बाद में ख़ुद भी उन्हें भूल गया। जब सुबह मैंने अपनी इस रोया का उल्लेख हज़रत ख़लीफा अव्वल से किया और यह भी कहा कि सपने में फरिशता ने जो बातें बताई थीं उनमें से कुछ आंख खुलने पर मुझे याद थीं लेकिन सुबह उठने पर वे मेरे मन में से निकल गईं तो हज़रत ख़लीफा अव्वल नाराज़ होकर कहने लगे कि तुम ने इतना ज्ञान बर्बाद कर दिया। उन्हें नोट कर लेना चाहिए था।" फरमाते हैं कि "मगर वह दिन गया और आज का दिन आया सूरे फातिहा से ख़ुदा तआला हमेशा मुझे नए नए बिंदुओं को समझाता है तो अभी भी रोया के बाद जब मैंने ध्यान किया कि जमाअत के सुधार और इस्लामी व्यवस्था की प्राथमिकता साबित करने के लिए कौन सा स्पष्ट कार्यक्रम हो सकता है तो अल्लाह तआला ने मुझे सूरे फातिहा से ही एक बहुत स्पष्ट और पूरा कार्यक्रम बताया जिस पर चलकर इस्लाम ऐसी तरक्की हासिल कर सकता है कि दुश्मन इस को देखकर चकित हो और इस्लामी सभ्यता की प्राथमिकता को स्वीकार किए बिना उसके लिए कोई उपाय न रहे। इस कार्यक्रम के अनुसार उन सभी ग़लतियों का भी ख़ुदा तआला की कृपा से निवारण हो सकता है जो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद मुसलमान, इस्लामी प्रणाली और उसकी संस्कृति के आदेशों को समझने में कर चुके हैं। (जो बाद में मुसलमानों ने ग़लतियाँ की थीं) और यह सब कुछ ख़ुदा तआला ने सूर: फातिहा के माध्यम से मुझे समझा दिया और इस रोया की वास्तविक व्याख्या यह थी कि मेरी अन्दरूनी शक्तियों में सूर: फातिहा का ज्ञान विशेष रूप से और कुरआन की समझ आमतौर से रखी जो समय-समय पर अन्दरूनी इल्हाम के साथ ज़रूरत के अनुसार प्रकट होती रहेगी।

(ख़ुत्बाते महमूद भाग 25 पृष्ठ 90-92)

फिर आप ने यह भी उल्लेख किया कि जिस समय जमाअत में मतभेद पैदा हुआ कि अल्लाह तआला ने मुझे इल्हाम के द्वारा बताया कि "लनमज़्ज़ेकनहुम।" हम उन्हें टुकड़े टुकड़ें कर देंगे तो उस समय ये लोग (जो जमाअत को छोड़ गए थे) अपने आप को 95 प्रतिशत कहा करते थे मगर अब उनकी क्या हालत है।? अल्लाह तआला ने उन्हें इस भविष्यवाणी के अनुसार वास्तव में टुकड़े टुकड़े कर दिया है तो ख्वाजा कमालुद्दीन साहिब ने अपनी वफात से पहले लिखा कि मिर्ज़ा महमूद ने हमारे बारे में जो इल्हाम प्रकाशित किया था वह सम्पूर्ण रूप से पूरा हो गया है और हम वास्तव में टुकड़े टुकड़े हो गए हैं।"

फिर आप फरमाते हैं कि "सारांश यह कि अल्लाह तआला ने कई बार मुझ पर अपना ग़ैब प्रकट कर के इस भविष्यवाणी को सच्चा कर दिया है कि मुस्लेह मौऊद ख़ुदा तआला की रूह से लाभांवित होगा। यह अल्लाह तआला के निशान हैं जो उसने मेरे द्वारा प्रकट फरमाए हैं।" यह आप फरमाते हैं और भविष्यवाणी का तो लंबा विवरण है।

बहरहाल अगले दिनों में जमाअतों में इस भविष्यवाणी के बारे में भी जलसे होंगे। जमाअत के लोगों को इन में अधिकतम शामिल होना चाहिए। एम.टी.ए पर भी कार्यक्रम आ रहे हैं उन्हें सुनना चाहिए ताकि इस भविष्यवाणी का गहराई में ज्ञान भी हो। इस भविष्यवाणी में असंख्य निशान हैं। कई बार पचास पचपन साठ तक निकाले हैं आप ने जो गुणों का वर्णन किया गया है इस भविष्यवाणी का जो विवरण वर्णन हुए हैं वे सभी निशान हैं जो बड़ी शान से हज़रत मुस्लेह रज़ियल्लाहो अन्हो में पूरे हुए हैं।

☆☆☆

ख़ुत्बः जुमअः

आजकल जो दुनिया के हालात हैं सब को पता हैं। हर जगह दंगा और फित्ना है। इस्लाम विरोधी शक्तियां इन हालात का ज़िम्मेदार, जैसे कि मैं कई बार कह चुका हूं कि मुसलमानों को ठहराती हैं। यह भी ठीक है कि कुछ मुस्लिम समूह और संगठन इस्लाम के नाम पर मुस्लिम देशों में भी और ग़ैर मुस्लिम देशों में भी ऐसी हरकतें कर रहे हैं जो अत्याचार और बर्बरता के अतिरिक्त कुछ नहीं और इस्लाम की शिक्षा से दूर का भी वास्ता नहीं लेकिन यह भी वास्तविकता है कि एक योजना के तहत मुसलमानों के अंदर यह हालात पैदा किए गए हैं और किए जा रहे हैं। इस्लाम को नुकसान प्राय स्वार्थी मुसलमानों और मुनाफिकों ने ही पहुंचाया है जो अपने हितों के लिए ऐसी शक्तियों का माध्यम बनते रहे हैं। बहरहाल दुनिया के सामान्य हालात ख़राब हैं। कुछ मुसलमानों के ग़लत कर्मों की वजह से इस्लाम विरोधी ताकतों को इस्लाम को बदनाम करने का ख़ूब मौका मिल रहा है। अत: ज़ाहिर है हम अहमदी मुसलमान भी इस कारण उसका निशाना बनते हैं।

अहमदी न केवल मुसलमान होने के नाते बल्कि मुस्लिम देशों में भी अहमदी होने के कारण कठिनाइयों से गुज़र रहे हैं। सिर्फ इसलिए कि हम ने आने वाले मुनादी (घोषणा करने वाले) को जो अल्लाह तआला के वादे के अनुसार आया मान लिया। पाकिस्तान में तो क्रूर कानून की वजह से मौलवी को खुली छुट्टी मिली हुई है और मौलवी के डर से अदालतें भी न्याय न करने पर मजबूर हैं लेकिन अब अल्जीरिया में भी अदालतों ने यही व्यवहार अपना लिए हैं कि तथाकथित मौलवी के डर से मासूम अहमदियों को जेल में ग़लत आरोप लगाकर भेजा जा रहा है।

हमारे पास न सांसारिक हुकूमत है न ही सांसारिक धन और तेल का पैसा है। हां एक बात है जिसकी तरफ दुनिया के हर अहमदी को ज्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है और वह है इबादत, सदके और इस्तिग़फार द्वारा ख़ुदा तआला की निकटता हासिल करना। यही बातें हैं जो अल्लाह तआला के रहम को जोश में लाती हैं और इंसान अल्लाह तआला की शरण में आता है।

इंसान के अंदर कई कमज़ोरियां होती हैं कभी-कभी हम सांसारिक कार्यों में व्यस्तता के कारण से अपनी इबादतों को अदा करने का भी हक़ अदा नहीं करते। कोई व्यक्तिगत मुश्किल आए तो थोड़ा सा सदके की ओर ध्यान पैदा हो जाता है अन्यथा नहीं। इस्तिग़फार की ओर ध्यान का जो हक है वह अदा नहीं करते। अगर हम में से हर एक अपनी समीक्षा करे तो यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि हम में से ज्यादातर यह हक अदा नहीं करते। अत: अगर अल्लाह तआला के फज़्लों को प्राप्त करना है और उसके रहम को जोश दिलाने वाला और दुश्मन और विरोधियों के प्रयासों को असफल और नामुराद करने वाला बनना है तो हमें इन बातों की ओर बहरहाल ध्यान देना होगा जो अल्लाह तआला की रज़ा और इस्तिग़फार पाने वाले हैं।

क़ुरआन मजीद ,आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के हवाले से इबादत की स्थापना, अत्यधिक तौब: तथा इस्ग़िफ़ार और सदकों के अदा करने की तरफ ध्यान देने की विशेष नसीहत।

आदरणीय सअदह बरतावी साहिबा पत्नी मरई बरतावी आफ सीरिया की वफात, मरहूम: का ज़िक्र ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 24 फरवरी 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

आजकल जो दुनिया के हालात हैं सब को पता हैं। हर जगह दंगे और फित्ना है। इस्लाम विरोधी शक्तियां इन हालात का ज़िम्मेदार, जैसे कि मैं कई बार कह चुका हूं कि मुसलमानों को ठहराती हैं। यह भी ठीक है कि कुछ मुस्लिम समूह और संगठन इस्लाम के नाम पर मुस्लिम देशों में भी और ग़ैर मुस्लिम देशों में भी ऐसी हरकतें कर रहे हैं जो अत्याचार और बर्बरता के अतिरिक्त कुछ नहीं और इस्लाम की शिक्षा से दूर का भी वास्ता नहीं लेकिन यह भी वास्तविकता है कि एक योजना के तहत मुसलमानों के अंदर यह हालात पैदा किए गए हैं और किए जा रहे हैं। इस्लाम को नुकसान प्राय स्वार्थी मुसलमानों और मुनाफिकों ने ही पहुंचाया है जो अपने हितों के लिए ऐसी शक्तियों का माध्यम बनते रहे हैं। बहरहाल दुनिया के सामान्य हालात ख़राब हैं। कुछ मुसलमानों के ग़लत कर्मों की वजह से इस्लाम विरोधी ताकतों को इस्लाम को बदनाम करने का ख़ूब मौका मिल रहा है। अत: ज़ाहिर है हम अहमदी मुसलमान भी इस कारण उसका निशाना बनते हैं।

यद्यपि हमें जानने वाले जानते हैं कि अहमदियत की शिक्षा और कर्म प्यार मुहब्बत और भाईचारा के अतिरिक्त कुछ नहीं लेकिन साधारण लोग हमें भी उसी तरह विचार करते हैं जैसा कि मीडिया ने साधारण अवधारणा मुसलमानों और इस्लाम के बारे में फैलाई हुई है। कुछ देशों की राष्ट्रवादी संगठन और पार्टियां कोई बात सुनना ही नहीं चाहतीं और केवल नकारात्मक व्यवहार और विचार और उसके अनुसार कार्य पर ही ज़ोर है। इस विरोध का जर्मनी के पूर्वी भाग में भी सामना है और नीदरलैंड में भी जहां जल्द ही चुनाव होने वाले हैं। इसी तरह यूरोप और देशों में भी राईटसट अब ज़ोर पकड़ रहे हैं और अमेरिका का हाल तो सामने ही है और फिर अहमदी न केवल मुसलमान होने के नाते बल्कि मुस्लिम देशों में भी अहमदी होने के कारण कठिनाइयों से गुज़र रहे हैं। सिर्फ इसलिए कि हम ने आने वाले मुनादी (घोषणा करने वाले) को जो अल्लाह तआला के वादे के अनुसार आया मान लिया। पाकिस्तान में तो क्रूर कानून की वजह से मौलवी को खुली छुट्टी मिली हुई है और मौलवी के डर से अदालतें भी न्याय न करने पर मजबूर हैं लेकिन अब अल्जीरिया में भी अदालतों ने यही व्यवहार अपना लिए हैं कि तथाकथित मौलवी के डर से मासूम अहमदियों को जेल में ग़लत आरोप लगाकर भेजा जा रहा है। इस समय भी वहाँ सोलह अहमदी अहमदियत के कारण जेल की सज़ा काट रहे हैं तो ऐसे में एक अहमदी को क्या करना चाहिए।?

हमारे पास न सांसारिक हुकूमत है न ही सांसारिक धन और तेल का पैसा है। हां एक बात है जिसकी तरफ दुनिया के हर अहमदी को ज्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है और वह है इबादत, सदके और इस्तिग़फार द्वारा ख़ुदा तआला की निकटता हासिल करना। यही बातें हैं जो अल्लाह तआला के रहम को जोश में लाती हैं और इंसान अल्लाह तआला की शरण में आता है। इबादत से और विशेष रूप से नमाज़ों की तरफ उन्हें अदा करने की तरफ पिछले ख़ुत्बा में ध्यान दिला चुका हूँ। आज सदकों और इस्तिग़फार के बारे में अधिक बात करूंगा कि ये ख़ुदा तआला के रहम को पाने का माध्यम हैं। इंसान के अंदर कई कमज़ोरियां होती हैं कभी-कभी हम सांसारिक कार्यों में व्यस्तता के कारण वजह से अपनी इबादतों को अदा करने का भी हक़ अदा नहीं करते। कोई व्यक्तिगत मुश्किल आए तो थोड़ा सा सदके की ओर ध्यान पैदा हो जाता है अन्यथा नहीं। इस्तिग़फार की ओर ध्यान का जो हक है वह अदा

नहीं करते। अगर हम में से हर एक अपनी समीक्षा करे तो यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि हम में से ज्यादातर यह हक अदा नहीं करते। अत: अगर अल्लाह तआला के फज़्लों को प्राप्त करना है और उसके रहम को जोश दिलाने वाला और दुश्मन और विरोधियों के प्रयासों को असफल और नामुराद करने वाला बनना है तो हमें इन बातों की ओर बहरहाल ध्यान देना होगा जो अल्लाह तआला की रज़ा और इस्तिग़फार पाने वाले हैं।

जब अल्लाह तआला फरमाता है कि मैं तौबा (पश्चाताप) और इस्तिग़फार और सदकों को स्वीकार करता हूँ तो यह इसलिए है कि तुम तौबा और इस्तिग़फार की ओर ध्यान दो, ताकि तुम्हारी परेशानी दूर करूं तुम्हारी बेचैनियां दूर करूं तुम्हें अपने करीब करूं। तुम्हारे पिछले गुनाहों को माफ करूं। तुम्हें सही बन्दा बनने की तौफ़ीक़ प्रदान करूं तुम पर अपनी दया करूं। जैसा कि इस आयत में भी कुरआन शरीफ में अल्लाह तआला फरमाता है कि اَلَمۡ یَعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰہَ ہُوَ یَقۡبَلُ التَّوۡبَۃَ عَنۡ عِبَادِہٖ وَ یَاۡخُذُ الصَّدَقٰتِ وَ اَنَّ اللّٰہَ ہُوَ التَّوَّابُ الرَّحِیۡمُ (अत्तौब: 104) अर्थात क्या उन्हें पता नहीं कि अल्लाह तआला ही अपने बन्दों की तौबा स्वीकार करता है और सदकों को स्वीकार करता है और अल्लाह तआला ही है जो तौबा स्वीकार करने वाला और बार बार दयालु है।

सदक: (दान) और नमाज़ के महत्त्व और संबंध के बारे में एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि

"सदक: सिदक से लिया गया है जब कोई व्यक्ति ख़ुदा तआला के मार्ग में सदक: देता है तो पता चला ख़ुदा तआला से सच्चा सम्बन्ध रखता है।" सच्चाई का संबंध रखता है। "दूसरा दुआ।" फरमाया कि "दुआ के साथ दिल पर सोज़ तथा गुदाज़ और नर्मी पैदा होती है।" (दुआ वह है जो दिल में सोज़ और नर्मी पैदा करे।) "दुआ में एक कुरबानी है। ईमानदारी और दुआ अगर यह दो बातें मयस्सर आ जाएं तो अकसीर है।" अगर यह दोनों बातें मयस्सर आ जाएं तो एक सफल इलाज है।

(मल्फूज़ात भाग 7 पृष्ठ 87-88 हाशिया प्रकाशन 1985 ई प्रकाशन यू.के)

अत: इस्तिग़फार भी दुआ ही है और जब मनुष्य अपने गुनाहों से और अपनी कमज़ोरियों को सामने रखते हुए दुआ करता है तो एक तरलता और जोश पैदा होता है और होना चाहिए। दिल में एक दर्द पैदा होना चाहिए केवल मुंह से "अस्तग़फरुल्लाह अस्तग़फरुल्लाह" कहने और ध्यान अल्लाह तआला के स्थान पर कहीं और रहने से उद्देश्य पूरा नहीं होता। इसलिए अल्लाह तआला दुआओं को सुनता है और सदके जो बेचैनी की हालत में अल्लाह तआला का रहम पाने के लिए दिए जाते हैं अल्लाह तआला उन्हें स्वीकार करता है और जब बंदा यह संकल्प भी करता है कि भविष्य में अपनी कमज़ोरियों से बचने की भरपूर कोशिश करूंगा और जब बंदा अल्लाह तआला का रहम अवशोषित करने की कोशिश करे तो फिर अल्लाह तआला ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से हमें यह ख़ुशख़बरी भी दी, दुआओं और सदकों को स्वीकार करने की ओर अधिक व्याख्या की और फरमाया कि मेरे बन्दों को बता दो कि अगर मेरा बन्दा मेरी ओर एक कदम चल कर आता है तो मैं उसकी ओर दो कदम चल कर आता हूँ। अगर मेरा बन्दा तेज़ चलकर मेरी ओर आता है तो मैं दौड़कर आता हूँ। (सहीह अल्बुख़ारी किताबुत्तौहीद हदीस 7405) अत: अल्लाह तआला के रहम की कोई सीमा नहीं। फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फरमाया कि अल्लाह तआला तो बड़ा हया वाला है बड़ा उदार है बड़ा दयालु है। जब बन्दा उसके सामने अपने हाथ बढ़ाता है तो वह उन्हें खाली हाथ और असफल वापस करते हुए शर्माता है।

(सुनन अत्तिरमज़ी हदीस 3556)

हाँ, यह हो सकता है जिस तरह बंदा परिणाम मांगता है या परिणाम की इच्छा रखता है ज़रूरी नहीं कि इसी तरह और उसी समय यह परिणाम प्रकट हो जाएं। कई बार अल्लाह तआला के ज्ञान के अधीन कुछ समय बाद और किसी और रंग में इन दुआओं और सदकों का परिणाम प्रकट हो रहे होते हैं। कभी इसी तरह तुरंत परिणाम प्रकट हो जाते हैं।

इसलिए यह पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि ख़ुदा तआला ने जो फरमाया कि मैं दुआ सुनता हूँ मैं इस्तिग़फार स्वीकार करता हूँ। सदकों को स्वीकार करता हूं अर्थात जब मनुष्य अपने गुनाहों से इस्तिग़फार मांग रहा हो और भविष्य में गुनाहों और कमज़ोरियों से बचने का वादा भी कर रहा हो और भरपूर कोशिश कर रहा हो तो वह उसे स्वीकार करता है और हर प्रकार की चिंताओं और परेशानियों से निकालता है।

हमेशा याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला हमारे दिलों के हाल जानता है इसलिए हमारे दिखावे के कर्म उसके यहां स्वीकार नहीं होते और शुद्ध होकर कर्म किए जाएं तो जैसा कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला बिना परिणाम या इनाम नहीं छोड़ता।

अल्लाह तआला तो इतना मेहरबान है कि अपने बन्दों पर मेहरबानी की यह अवस्था है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो लोग इतनी सुविधा न रखते हों कि सदक: दे सकें तो नेक बातों का पालन करना और बुरी बातों से रुकना ही उन्हें सदक: का सवाब दे देगा।

(सहीह अल्बुख़ारी हदीस 1445)

उनकी इबादतें और इस्तिग़फार और नेक काम जो दूसरे को लाभ पहुंचाने के लिए हैं वे जहां इबादतों और इस्तिग़फार के रूप में अल्लाह तआला के यहां स्वीकार्य होंगी वहां वह नेक कामों सदकों का सवाब भी प्राप्त कर रहे होंगे। एक धनी व्यक्ति सदका देकर जो सवाब कमा रहा होगा एक गरीब व्यक्ति अपनी नेक निय्यत के कारण बशर्ते वह बाकी आदेश का पालन कर रहा है सदकों के भी बराबर सवाब कमा रहा होगा।

इसलिए ऐसे प्यार करने वाले ख़ुदा का किस तरह हमें धन्यवाद करना चाहिए जो न केवल हमें अपनी कमज़ोरियों से बचने के तरीके सिखाए बल्कि यह भी फरमा दिया कि मैं तुम्हारे इन कर्मों को जो तुम कमज़ोरियों और गुनाहों से बचने के लिए करते हो स्वीकार करते हुए जबकि तुम्हें मुसीबतों और दु:खों से भी छुटकारा दूंगा। इसलिए मुश्किल हालात से निकलने का सिर्फ यही मतलब है कि हम अपनी इबादतों और अपनी दुआओं को शुद्ध करते हुए अल्लाह तआला के आगे झुकें। इस्तिग़फार पर ज़ोर दें। जमाअत के रूप में ही और व्यक्तिगत रूप से भी सदक: और ख़ैरात पर ध्यान दें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सदक: और इस्तिग़फार के विषय की गहराई का वर्णन करते हुए विभिन्न अवसरों पर उपदेश फरमाए हैं, जिन में से कुछ मैं बयान करता हूँ।

इस्तिग़फार की वास्तविकता बयान फरमाते हुए हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"गुनाह एक ऐसा कीड़ा है जो इंसान के ख़ून में मिला हुआ है मगर उसका इलाज इस्तिग़फार से ही हो सकता है। इस्तिग़फार क्या है? यही कि जो गुनाह हो चुके हैं" (जो गुनाह हम कर चुके हैं) " उनके बुरे फलों से ख़ुदा तआला सुरक्षित रखे और जो अब घटित नहीं हुए और जो शक्ति के रूप में आदमी में मौजूद हैं" (जिनकी संभावना है कि हो सकता है या जो शक्तियां व्यक्ति में मौजूद हैं कि वे शक्तियां गुनाह की ओर ले जा सकती हैं) "उनके घटित होने का समय ही न आए।" (वह गुनाह हम से घटित ही न हों यह इस्तिग़फार है) "और अंदर ही अंदर वह जल-भुनकर राख हो जाएं।" (अर्थात पिछले गुनाहों की माफी भी और भविष्य में गुनाहों से बचने के लिए इस्तिग़फार है ताकि अल्लाह तआला का रहम जोश में आए और वह हमें अपनी दया और फज़्लों से सम्मानित करता रहे।) फरमाया कि "यह समय बड़े डर का है इसलिए तौबा और इस्तिग़फार में व्यस्त रहो और अपने नफ्स की समीक्षा करते रहो। हर धर्म व मिल्लत के लोग और किताब वाले मानते हैं कि सदकों और ख़ैरात से अज़ाब टल जाता है मगर अज़ाब के अवतरित होने से पहले। मगर जब नाज़िल हो जाता है तो कभी नहीं टलता। अत: तुम अभी से इस्तिग़फार करो और तौबा में लग जाओ ताकि तुम्हारी बारी न आए और अल्लाह तआला तुम्हारी सुरक्षा करे।"

(मलुफूज़ात भाग 5 पृष्ठ 299 प्रकानि 1985 ई)

अभी तो यह छोटी सी मुशकिलें है लेकिन यह छोटी छोटी परेशानियों हमें नज़र आ रही हैं लेकिन जिस तरफ दुनिया जा रही है जिस तरह मनुष्य बेलगाम हो रहा है जिस तरह अल्लाह तआला की नाराज़गी के सामान हो रहे हैं तो मनुष्य इस विनाश की तरफ जा रहा है जो मनुष्य के अपने हाथों से होनी है। यह दुनिया अल्लाह तआला की नाराजगी को भड़का रही है। इसलिए ऐसे समय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने वालों का यह काम है कि जहां हम अपने आप को बुरे प्रभाव से बचाने के लिए तौबा और इस्तिग़फार पर ज़ोर दें वहाँ सामान्य रूप में भी दुनिया के लिए भी दुआ करें कि अल्लाह तआला उनको भी बुद्धि दे।

फिर इस्तिग़फार की वास्तविकता बयान करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अधिक फरमाते हैं कि

"जानना चाहिए कि अल्लाह तआला के कुरआन शरीफ ने दो नाम वर्णन किए हैं। अलहय्यो और अलकय्यूमो। अलहय्यो का अर्थ है जीवित और दूसरों को जीवन देने वाला है। अलकय्यूमो ख़ुद स्थापित और दूसरों की स्थापना का वास्तविक कारण। प्रत्येक चीज़ की बाहरी तथा भीतरी स्थापना और जीवन इन्हीं दोनों विशेषताओं के

कारण है। इसलिए "हय्यो" का शब्द चाहता है कि उसकी इबादत की जाए जैसा कि इस की अभिव्यक्ति सूर: फातिहा में "इय्याक नअबदो" है। और "अलकय्यूमो" चाहता है कि इससे सहारा मांगा जाए इसे "इय्याक नसतईन" शब्द के द्वारा व्यक्त किया गया है। "हय्यो" का शब्द इबादत को इसलिए चाहता है कि उसने पैदा किया और फिर पैदा कर के छोड़ नहीं दिया जैसे वास्तुकार जिसने इमारत को बनाया है उसके मर जाने से इमारत का कोई हर्ज नहीं है लेकिन मनुष्य को ख़ुदा की ज़रूरत प्रत्येक अवस्था में रहती है इसलिए ज़रूरी हुआ कि ख़ुदा से ताकत मांगते रहो और यही इस्तिग़फार है" (अल्लाह तआला से अगर गुनाहों से बचने की शक्ति मांगते रहें, उसकी इबादतों के लिए शक्ति मांगते रहें और यह शक्ति मांगना जो है फ़रमाया यही इस्तिग़फार है।) फरमाया कि "मूल वास्तविकता तो इस्तिग़फार की यह है फिर इसे विस्तृत कर के उन लोगों के लिए किया गया कि जो गुनाह करते हैं उनके बुरे परिणाम से सुरक्षित रखा जाए लेकिन मूल यह है कि मानवीय कमज़ोरियों से बचाया जाए।" फरमाया कि "इसलिए जो मनुष्य होकर इस्तिग़फार की ज़रूरत नहीं समझता वह बे अदब नास्तिक है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 217 प्रकाशन 1985 ई प्रकाशन यू.के)

अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करने और तौबा और इस्तिग़फार का महत्त्व ब्यान फरमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"इंसान बहुत बड़े काम के लिए भेजा गया है" इस से पहले इस काम का विवरण आप ने यह वर्णन किया कि इंसान अपनी अवस्था में शुद्ध परिवर्तन उत्पन्न करे। यह बहुत बड़ा काम है मनुष्य के लिए कि अपनी अवस्था में शुद्ध परिवर्तन उत्पन्न करे और ख़ुदा तआला से सुलह करे। उसे नाराज़ न करे और पता करे कि किस उद्देश्य के लिए दुनिया में आया है। इंसान को यह भी पता होना चाहिए किस उद्देश्य के लिए दुनिया में आया है और यह उद्देश्य जैसा कि हम जानते हैं अल्लाह तआला ने बयान भी फरमाई है कि अल्लाह तआला की इबादत करके उसकी निकटता हासिल करना है। बहरहाल फिर आप फरमाते हैं) "बहुत बड़े काम के लिए भेजा गया है लेकिन जब समय आता है और वह इस काम को पूरा नहीं करता तो ख़ुदा फिर उसका काम तमाम कर देता है। सेवक को ही देख लो कि जब वह ठीक से काम नहीं करता तो आक़ा उसे अलग कर देता है फिर ख़ुदा तआला उस अस्तित्व को क्योंकर स्थापित रखे जो अपने कर्तव्य को अदा नहीं करता।" आप उदाहरण देते हुए फरमाते हैं कि "हमारे मिर्ज़ा साहिब "(अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्वर्गीय पिता) "पचास वर्ष तक इलाज करते रहे। उनका कथन था कि उन्हें कोई हकीमी नुस्खा नहीं मिला। सच यही है कि ख़ुदा तआला की आज्ञा के बिना प्रत्येक कण जो इंसान के अंदर जाता है कभी उपयोगी नहीं हो सकता।" फरमाया कि "तौबा और इस्तिग़फार बहुत करनी चाहिए ताकि ख़ुदा तआला अपना फज़ल करे। जब ख़ुदा तआला का फज़ल आता है तो दुआ स्वीकार हो जाती है। ख़ुदा ने यही फरमाया है कि दुआ स्वीकार करूँगा और कभी फरमाया कि मेरी क़ज़ा व क़द्र मानो।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि) "इसलिए मैं तो जब तक आदेश न हो ले कम उम्मीद स्वीकृति की करता हूँ। बंदा बहुत ही कमज़ोर और असहाय है। इसलिए ख़ुदा की कृपा पर निगाह रखनी चाहिए

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 319 प्रकाशन 1985 ई प्रकाशन यू.के)

और अल्लाह तआला के फज़ल पर निगाह रखने के लिए हर समय ख़ुदा तआला पर निगाह रखने की ज़रूरत है, उस से जुड़े रहने की ज़रूरत है। तौबा और इस्तिग़फार की ज़रूरत है। अल्लाह तआला का हक़ अदा करने और उसके बन्दों का हक देने की ज़रूरत है।

फिर इस बात का वर्णन कहते हुए कि रोना और सदका जुर्म को रद्द कर देते हैं, आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"दुआ बहुत बड़ी ढाल सफलता के लिए है। यूनुस की क़ौम रोने और दुआ के कारण आने वाले अज़ाब से बच गई।" फरमाया कि "मेरी समझ में मुहातबत मग़ाज़बत को कहते हैं।" (अर्थात आपस में उग्र होना और एक दूसरे पर ग़ुस्सा करना या किसी बात पर ग़ुस्सा करना) फरमाया "मेरी समझ में तो मुहातबत मुगाज़बत को कहते हैं इस ग़ुस्से की अभिव्यक्ति और नाराजगी को फरमाया कि "और हूत व्हेल मछली को कहते हैं और नून तेज़ी को भी कहते और मछली भी। तो हज़रत यूनुस की वह स्थिति एक मुगाज़बत की हालत थी" (ग़ुस्सा की हालत थी।) वास्तव में यूं है कि अज़ाब के टल जाने से उन्हें शिकवा और शिकायत का ख्याल हुआ कि भविष्यवाणी और दुआ यूं ही व्यर्थ गई और यह भी विचार आया कि मेरी बात क्यों न हुई। इसलिए यही मुग़ाज़बत की हालत थी।" फरमाया कि "इससे एक शिक्षा मिलती है कि तकदीर को अल्लाह तआला बदल देता है और रोना धोना और सदक जुर्म को भी रद्द कर देते हैं।" फरमाया कि "सदक: का सिद्धांत इसी से निकला है। यह तरीके अल्लाह तआला को प्रसन्न करते हैं।" फरमाते हैं कि "तअबीरुर्अया में माल कलेजा होता है इसलिए सदक: करना जान देना होता है। मनुष्य सदक: करते समय कितनी ईमानदारी दिखाता है और वास्तविक बात तो यह है कि सिर्फ ज़बानी बातों से कुछ नहीं बनता जब तक कि व्यावहारिक रंग में लाकर किसी बात को न दिखाया जाए।" फरमाया कि "सदक: उसे इसलिए कहते हैं कि सच्चों पर निशान बनाता है। हज़रत यूनुस के हालात में दुर्रेमन्सूर में लिखा है कि आपने कहा कि मुझे पहले से ही पता था कि जब तेरे सामने कोई आएगा तो तुझे दया आ जाएगी।" अल्लाह तआला को रहम आ जाएगा।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 237-238 प्रकाशन 1985 ई प्रकाशन यू.के)

एक मजलिस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जिसका विवरण अखबार बदर में छपा है कि

"कुछ लोग बाहर से आए। जुम्अ: की नमाज़ के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पधारे तो अखबार वाले लिखते हैं कि "जुम्अ की नमाज़ के अदा करने के बाद आस पास के लोगों ने बैअत की और हज़रत अक़्दस ने उनके लिए एक संक्षिप्त भाषण नमाज़ रोज़े की पाबंदी और प्रत्येक अत्याचार आदि से बचने पर फरमाया कि अपने घरों में महिलाओं, लड़कियों और लड़कों सब को नेकी की नसीहत करें और जैसे पेड़ों और खेतों को अगर पूरा पानी न दिया तो वह फल नहीं लाते इसी तरह जब तक नेकी का पानी दिल को न दिया जाए तो वह भी इंसान के लिए किसी काम का नहीं होता।" आपने फरमाया कि घरों में नेकियों का उल्लेख चलते रहने चाहिए ताकि दुआओं की तरफ भी ध्यान पैदा होता रहे। इस्तिग़फार की ओर भी ध्यान पैदा होता रहे। बाकी नेक कामों की ओर भी ध्यान पैदा होता रहे और यही पानी है जिस से नेकी का पौधा परवान चढ़ता है। ईमान मज़बूत होता है। लिखने वाले लिखते हैं कि आप ने "हंसी और ठट्ठे की मज्लिसों से परहेज़ (करने) की ताकीद फरमाई। नबियों की वसीयत याद दिलाई कि सदक: और दुआ से बला टल जाती है।" फरमाया कि "अगर पैसा न हो तो एक बोका (डोल) पानी का किसी को भर दो" (अर्थात कुओं में से डोल डालते हैं, डोल डाल कर पानी भर दो) "यह भी सदक: है।" फरमाया कि "अपने धन और शरीर से किसी की भी सेवा कर देना यह भी सदक: है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 81-82 प्रकाशन 1985 ई प्रकाशन यू.के)

अत: अल्लाह तआला की कृपा प्राप्त करने के लिए इबादतों की पाबन्दी जहां आवश्यक है वहां हर तरह के अत्याचार और दुर्व्यवहार से बचना भी ज़रूरी है और लोगों के काम आना भी ज़रूरी है। घरों में बजाय अधिक समय सांसारिक कामों में बिताने के नेकी की बातें करने की ओर ध्यान दिलाने की ज़रूरत है। ऐसी मज्लिसों से बचने की ज़रूरत है, जहां केवल हंसी उपहास हो रहा हो। दूसरों का मज़ाक उड़ाया जा रहा हो और जैसा कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया यह मारूफ (सर्वविदित) बातें हैं जो सदक: है। लोगों के काम आना भी सदक: है। जो लोगों की कठिनाइयों को दूर करते हैं वह भी सदक: देता है। इसलिए इस ओर हमारा ध्यान देना चाहिए।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक मौके पर फरमाया कि

"सभी धर्मों के बीच यह बात सर्वसहमत है कि सदक: के साथ बला टल जाती है और बला के आने के बारे में ख़ुदा तआला पहले से ख़बर दे तो वह चेतावनी की भविष्यवाणी है। इसलिए सदक: और तौबा करने और ख़ुदा तआला की ओर लौटने से चेतावनी की भविष्यवाणी भी टल सकती है।" फरमाया कि "एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बर इस बात को मानते हैं कि सदकों से बला टल जाती हैं।

(मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 227 प्रकाशन 1985 ई प्रकाशन यू.के)

अगर बला ऐसी चीज़ है कि वह टल नहीं सकती तो फिर सदक: सब व्यर्थ हो जाते हैं।" इसलिए अल्लाह तआला जब फरमाता है कि मैं सदकों को स्वीकार करता हूँ तो वह ऐसी स्थिति में भी स्वीकार करने की शक्ति रखता है और स्वीकार करता है जिसके बारे में वह कभी-कभी अपने नबियों और फरस्तादों के माध्यम से बता भी देता है कि ऐसा होगा। अज़ाब की भविष्यवाणी भी हो जाती है जैसा कि यूनुस की क़ौम के बारे में था और उसकी क़ौम दुआ और सदक: और रोने-धोने से बच गई और जो तबाही की भविष्यवाणी थी वह टल गई। अत: जब नबियों की गई पेशगोइयां भी सदक: से टल सकती हैं तो जो कठिनाइयां मनुष्य के अपने कर्मों के परिणाम से सामने आती हैं, ख़ुदा तआला को भूलने के परिणाम में सामने आती हैं

वे क्यों ख़ुदा तआला से इस्तिग़फार और तौबा करने और सदका करने से नहीं टल सकतीं। वास्तव में टल सकती हैं बशर्ते हमारा रोना धोना दुआ करना सदका करना भी अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार हो।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक मौके पर फरमाया कि सदक: ख़ुदा तआला के प्रकोप को शांत करता है और बुराई की मौत को दूर करता है

(सुनन अत्तिर्मज़ी हदीस 664)

फिर फरमाया कि "सदक: देकर आग से बचो चाहे आधी खजूर खर्च करने की शक्ति हो। (सहीह अल्बुख़ारी हदीस 1417)

और पहले हम आपका यह फरमान भी सुन चुके हैं कि अच्छी बातों, नेक बातों का पालन करना और बुरी बातों से रुकना भी सदक: है तो इन बातों को हमें हमेशा अपने सामने रखना चाहिए लेकिन साथ ही यह भी याद रखना चाहिए कि पहले भी जिसका उल्लेख हो चुका है कि इस्तिग़फार और दुआ की ओर ध्यान भी बेहद ज़रूरी है। दिल से निकली हुई इस्तिग़फार भविष्य में गुनाहों से भी बचाती है और अल्लाह तआला के रहम को भी जोश में लाती है और उसकी निकटता भी दिलाती है।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फरमाया कि तुम में से जिसके लिए दुआ का दरवाज़ा खोला गया तो मानो उसके लिए रहम के दरवाज़े खोल दिए गए और अल्लाह तआला से जो चीज़ मांगी जाती है उसमें से अधिकांश फरमाया कि अल्लाह तआला से जो चीज़ मांगी जाती है उसमें सबसे अधिक और भलाई मांगना प्रिय है।(सुनन अत्तिर्मज़ी हदीस 3548) अल्लाह तआला की भलाई मांगी जाए उसकी शरण में आया जाए।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी फरमाया कि दुआ उस परीक्षा के मुकाबला पर जो आ चुकी हो और उस के मुकाबले पर जो अभी न आई हो लाभ देती है। फरमाया है कि हे अल्लाह तआला के बन्दो! तुम पर अनिवार्य है कि तुम दुआ करने को धारण करो।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 7 पृष्ठ 357 प्रकाशन आलमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"याद रखो लापरवाही का गुनाह लज्जित होने के गुनाह से बढ़कर होता है। यह गुनाह ज़हरीला और क़ातिल होता है तौबा करने वाला तो ऐसा ही होता है कि मानो उसने गुनाह किया ही नहीं।" (जिस ने सच्ची तौबा की। इस्तिग़फार किया। अपने पिछले गुनाहों की मांफी मांगी भविष्य में गुनाहों से बचने का संकल्प लिया किया है मानो उसने गुनाह किया ही नहीं।) फ़रमाया कि "जिसे पता ही नहीं कि मैं क्या कर रहा हूँ वह बहुत ख़तरनाक स्थिति में है। इसलिए ज़रूरत है कि लापरवाही को छोड़ दो।" (पता होना चाहिए हम क्या कर रहे हैं हमारा हर कर्म कैसा है।) फरमाया कि "और अपने गुनाहों से तौबा करो और ख़ुदा तआला से डरते रहो। जो आदमी तौबा करके अपनी स्थिति को ठीक कर लेगा वह दूसरों के मुकाबला में बचाया जाएगा अत: दुआ उसी को लाभ पहुंचा सकती है जो ख़ुद भी अपना सुधार करता है और ख़ुदा तआला के साथ अपने सच्चे संबंध को स्थापित करता है।" फरमाया कि "पैग़म्बर किसी के लिए अगर शिफाअत करे लेकिन वह व्यक्ति जिसकी शिफाअत की गई है अपना सुधार न करे और लापरवाही के जीवन से न निकले तो वह शिफाअत उसे लाभ नहीं पहुंचा सकती।"

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 230 प्रकाशन 1985 ई प्रकाशन यू.के)

अल्लाह तआला हमें अनुग्रह तौफीक दे कि दुआ की वास्तविकता को समझने वाले हों। शुद्ध होकर अल्लाह तआला के आगे झुकने वाले हों। इस्तिग़फार की ओर ध्यान देने वाले हों। अपने पिछले गुनाहों की क्षमा अल्लाह तआला के समक्ष झुकते हुए मांगने वाले हों और अगले गुनाहों से बचने का वादा करके इस की भरपूर कोशिश करने वाले हों। बलाओं को दूर करने के लिए ऐसे सदक़े देने वाले हों जो ख़ुदा तआला के यहाँ स्वीकार्य हों। अल्लाह तआला हमें अपनी शरण में रखे। दुश्मन और हर विरोद्धी के हर हमले से हमें सुरक्षित रखे और उन के हमले उन पर उल्टाए। हम हमेशा ख़ुदा तआला के उन बन्दों में शामिल हों जो अल्लाह तआला का डर मन में रखने वाले हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआओं के हम वारिस हों और उन में हिस्सा लेने वाले हों।

नमाज़ के बाद में एक नमाज़ जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा जो आदरणीया सअदह बरतावी साहिबा का है मरई बरतावी साहिब की पत्नी। होष अरब दमिश्क में उनकी वफात हुई थी। उनके घर में हीटिंग के लिए इस्तेमाल होने वाली गैस के लीक होने की वजह से आग लगने पर यह गंभीर रूप से झुलस गईं और अस्पताल ले जाया गया जहां इलाज के परिणाम में तबीयत में सुधार हुआ था और उन्होंने इस घटना पर बड़े धैर्य का प्रदर्शन किया। अल्लाह तआला की प्रशंसा में व्यस्त रहीं और सबसे कहती थीं कि वह ख़ुदा की तकदीर पर राज़ी हैं लेकिन चार दिन के बाद डॉक्टर के अनुसार उन्हें एक हार्ट अटैक हुआ जिसे वह सहन नहीं कर सकीं और 10 जनवरी 2017 ई को उनकी वफात हो गई। इन्ना लिल्लाह वा इन्न इलैहि राजेऊन। आप ने अपने पति के बाद 2004 ई में बैअत की थी लेकिन ईमानदारी व वफादारी में अपने पति और बच्चों से आगे थीं। उनके पति आदरणीय मरई साहिब बताते हैं कि बैअत के कुछ समय बाद गर्भवती हुई और गर्भावस्था के दौरान एक दिन सीढ़ियों से गिर गईं और खतरा था कि गर्भ बर्बाद न हो गया हो। रात सोईं तो सपना देखा कि कोई व्यक्ति आसमान से आवाज़ देता है कि डरो मत अल्लाह तआला भ्रूण की रक्षा करेगा और इस पर फैसला किया गया कि अगर बेटा हुआ तो उसका नाम अहमद रखेंगे तो ऐसा ही किया। फिर उस बच्चे की उम्र छह साल थी तो इसी प्रकार का सपना देखा कि आसमान से आवाज़ आती है कि अल्लाह तआला उस बच्चे की रक्षा करने वाला है। फिर एक दिन इस बच्चे के साथ राजमार्ग के किनारे पर चल रही थी कि अचानक इस बच्चे ने हाथ छुड़ाया और सड़क पार करने लगा इस पर उन्होंने अपना सिर पकड़ लिया और आँखें बंद कर लीं। जब आंखे खोलीं तो उनका बच्चा बिल्कुल ठीक ठाक सड़क की दूसरी ओर पहुँच चुका था और हाथ हिला रहा था उस पर उन्हें अपनी वह ख़वाब याद आ गई। उन के पति वर्णन करते हैं कि नेकियों में आगे बढ़ने वाली थीं। जब भी मुझे किसी के साथ कोई भलाई करने का विचार आता और मैं कहता कि मैं पत्नी को बताऊँगा कि हमें ऐसा करना चाहिए तो वह कहती कि मुझे भी यही विचार आया था और मैंने इस विश्वास से इस पर पालन किया है कि आप विरोध नहीं करेंगे बल्कि प्रोत्साहित करेंगे। पति अभी सोच रहा होता था और यह नेकी कर चुकी होती थीं। उन के पति कहते हैं कि इस प्रकार की घटनाओं से शायद कोई सप्ताह खाली गुज़रा हो।

जर्मनी में अपने दामाद मसअब शोवेईर साहिब कहते हैं कि बहुत नेक सीरत और भोली महिला थीं। किसी से दुश्मनी नहीं थी बहुत उदारता करने वाली थीं। उनके पति को 2009 ई से 2013 ई तक गिरफ्तारी के दौरान उन्होंने बहुत मेहनत कर बच्चों का पेट पाला और सब को संभाला और पिछले ऋण भी अदा किया। प्रत्येक नेकी में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेतीं। सबसे प्यार और मुहब्बत से पेश आतीं। चंदे हमेशा नियमित अदा करती थीं। उनको दमिश्क के क्षेत्र होश अरब में दफन किया गिया है जहां दफन करने से पहले अहमदियों और ग़ैर अहमदियों ने अलग जनाज़ा पढ़ा। अल्लाह तआला मरई से माफी का व्यवहार करे उन के स्तर बढ़ाए और उनकी नस्लों को भी जमाअत और ख़िलाफत से दृढ़ संबंध बनाए रखने की शक्ति प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيْلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वे कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बंधित कर देते तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह और की जान की शिरा काट देते ।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे प्राय: उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित किया गया है। किताब प्राप्त करने के लिए इच्छुक पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

सलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में

मुबारक मुंगेरी

सलाम ए ईसा दौराँ सलाम ऐ फज़्ले रहमानी
सलाम ऐ महदी आज़म सलाम ऐ शान रब्बानी
जरी अल्लाह बनकर हुल्ला हाए अंबिया लेकर
सलाम उस पर जो आया था बरूज़ी मर्तबा लेकर
फिज़ाए मादियत में वह वजूदे किबरया पाया
सलाम उस पर कि ज़ार रूस का जिसने असा पाया

नबुव्वत की सनद लेकर ग़ुलामी का मकाम आया
सलाम उस पर जिस पर मुस्तफा का ख़ुद सलाम आया
वह गोशा गीर गुमनामी मुहम्मद का वह दीवाना
सलाम उस पर मिला जिस को मसीहाई का परवाना
फकत आक़ा की खातिर जो सरे मैदां निकल आया!
सलाम उस पर पलट दी जिसने बढ़कर दीन की काया

परखच्चे ज़ुअमे बातिल के उड़ा कर रख दिए जिस ने
सलाम उस पर कि कसरे कुफ्र तोड़ ढा कर रख दिया जिसने
सलाम उस पर कलम जिसका चला तेग़ दो दम बनकर
सलाम उस पर कि आया जो सुल्तानुल कलम बनकर

सलाम उस पर सुरैया से जो फिर ईमान ले आया
बाद अंदाज़े सुलैमानी जो फिर कुरआन ले आया
सलाम उस पर कि मज़हब का उजाला कर दिया जिसने
असूले दीन के हर मज़मूं को बाला कर दिया जिसने

किया बातिल ज़माना में सलीबी इद्दआओं को
सलाम उस पर कि मारा जिसने मसनूई ख़ुदाओं को
सलाम उस पर दयारे कुफ्र में जब नाम आता है
कलीसा उसकी हैबत से अभी तक थरथराता है

सलाम उस पर ख़लीली शान जिस पर नाज़ करती है
कि आग उस के ग़ुलामों के ग़ुलामों से भी डरती है
सलाम उस पर जिस के सबर का छलका था जाम आख़िर
वह जिसकी बददुआ से कट मरा था लेखराम आख़िर
ग़ुलामे मुस्तफा की देखकर शाने गरामी को
सलाम उस पर कि कुफ्र आया था ख़ुद जिसकी सलामी को

सलाम उस पर ज़माने में जो यकता था निराला था
जो खाली हाथ था लेकिन सिहा मुल्लैल वाला था
पहुंची थी सरे अर्शे बरीं आहे रसा जिसकी
शहादत दे रही है आज तक बैतुद्दुआ जिसकी

सलाम उस पर जो बे इज़्ने शफाअत सरफराज़ आया
सलाम उस पर जिसे परवाना अंतल मजाज़ आया
इजाबत मुंतज़िर रहती थी ख़ुद जिस की दुआओं की
सलाम उस पर बदल दी जिसने किस्मत बे नावाओं की

मशिय्यत को भी सांचे में दुआ के ढालने वाला
सलाम उस पर जो था तकदीरे मुबरम टालने वाला
ख़ुदा की रहमतें नाज़िल हों मुदाम उस पर
सलाम उस पर दरूद उस पर, दरूद उस पर सलाम उस पर

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 20 मार्च 2015 पृष्ठ 16)

शेष पृष्ठ 2 पर

बहस नहीं कर सकता। जो लोग आपको बहस के लिए लाए थे उन्होंने बहुत बुरा मनाया और कहा कि आपने हमें नीचा कर दिया। पर आपने फ़र्माया मैं ने जो कुछ किया है ख़ुदा तआला के लिए किया है। मुझे लोगों के विरोध की या उन की प्रशंसा की कोई परवाह नहीं। इस बात पर अल्लाह तआला ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए आपको इल्हामन (ईश्वरीय वाणी) फ़र्माया :-

''ख़ुदा तेरे इस फ़ेअल (काम) पर राज़ी हुआ और वह तुझे बहुत बरकत देगा। यहाँ तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँढ़ेंगे।" (बराहीने अहमदिया चौथा भाग पृ,520)

आठ या नौ मास के रोज़े

1875 ई. या 1876 ई. में आपने अल्लाह तआला के संदेश पर आठ या नौ मास तक लगातार रोज़े रखे और अपने भोजन को कम करते चले गए यहाँ तक कि आठ पहर में कुछ तोले रोटी आपका भोजन रह गया। इस ज़माने में आप पर बहुत सी रूहानी बरकतें उतरीं। आपने स्वप्न तथा कश्फ़ में बहुत से मृत्यु पा चुके नबियों तथा अन्य बुज़ुर्गों से मुलाक़ात की।

पिता का देहान्त

1876 ई. में आपके पिता जी का देहान्त हो गया। आपके मन में यह विचार आया कि अब न जाने क्या क्या कठिनाइयाँ आएँगी। इस पर अल्लाह तआला की ओर से आपको इल्हाम हुआ : ''अलैसल्लाहो बिकाफ़िन अब्दहू"

(किताबुल बरिय्यह हाशिया (फ़ुट नोट) पृ. 159)

अर्थात क्या ख़ुदा अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं है ? इस इल्हाम ने आपको बहुत तसल्ली तथा संतोष दिया और बाद की घटनाओं ने स्पष्ट कर दिया कि वास्तव में हर मामले में ख़ुदा ने आपकी मदद की और इस प्रकार बता दिया कि वास्तव में अल्लाह तआला अपने इस पवित्र बन्दे के लिए काफ़ी है।

पिता जी के देहान्त के बाद आपके ख़ानदान की जायदाद की देखभाल करने वाले आपके बड़े भाई मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर साहिब बने। आप यदि चाहते तो जाएदाद में से अपना भाग अलग करवा कर संतोष से जीवन व्यतीत कर सकते थे। परन्तु आपने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया और जो कुछ रुखा सूखा अपने भाई से मिल जाता इसी पर सब्र के साथ गुज़ारा करते रहे। यह ज़माना आपने बहुत सी कठिनाइयों में व्यतीत किया। कई बार छोटी छोटी अवश्यकताओं को पूरा करने में मुश्किल पड़ती परन्तु आपने बहुत सब्र के साथ यह समय व्यतीत किया। अपना भोजन निर्धनों में बाँट देते और स्वयं बहुत ही कम भोजन पर गुज़ारा करते थे।

बराहीने अहमदिया पुस्तक की रचना

इसी ज़माने में आपने इस्लाम की सच्चाई साबित करने और इस्लाम विरोधियों का सबूतों के साथ मुक़ाबला करने के लिए अख़बारों में लेख लिखने आरम्भ किए। इन लेखों की बहुत चर्चा हुई। क्योंकि आप ने इस्लाम की सच्चाई ऐसे दृढ़ सबूतों से साबित की कि कोई इस्लाम का विरोधी इनके सामने ठहर न सका।

कुछ समय तक अख़बारों में लेख लिखने के बाद आपने बराहीने अहमदिया के नाम से एक पुस्तक लिखनी आरम्भ की जिसमें आपने क़ुर्आन मजीद की और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई के बहुत दृढ़ सबूत दिए। इस पुस्तक का प्रथम भाग 1880 ई. में दूसरा भाग 1881 ई. में, तीसरा भाग 1882 इ. तथा चौथा भाग 1884 ई. में प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक के प्रकाशित होने पर आप(अ) की प्रसिद्धि सारे देश में फैल गई। तथा सारे लोग आप(अ) की निपुणता को मानने लगे। मुसलमान इस पुस्तक से इतने प्रसन्न हुए कि मुसलमानों के एक प्रसिद्ध ज्ञानी मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी ने जो बाद में आपके घोर विरोधी हो गए थे, यह लिखा था कि :-

''हमारे विचार में यह पुस्तक इस समय में और वर्तमान हालत की दृष्टि से ऐसी पुस्तक है जिस का मुक़ाबला करने वाली पुस्तक आज तक इस्लाम में लिखी नहीं गई।"

(इशाअतुस्सुन्नह)यह तो थे इस पुस्तक के बारे में मुसलमानों के विचार। इस्लाम के विरोधियों पर इस पुस्तक का यह प्रभाव, पड़ा कि बावजूद इसके कि आपने इस पुस्तक का उत्तर लिखने का इनामी चैलेंज दिया और ललकारा कि कोई भी अन्य धर्म का आदमी मैदान में आ कर इसके सबूतों को तोड़े परन्तु किसी इस्लाम के शत्रु को इस का उत्तर लिखने की हिम्मत नहीं हुई। पर वह आपका बहुत विरोध करने लगे। कई तरीक़ों से उन्होंने आपको क्षति पहुँचाने का प्रयत्न किया परन्तु वह अपनी कोशिश में असफ़ल रहे और वह आपको कुछ भी क्षति नहीं पहुँचा सके।(शेष)

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

समस्त मुसलमानों से दर्दभरी अपील

अहमदिया मुस्लिम जमाअत पूर्ण ईमान, विश्वास और पूर्ण मारिफ़त से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन मानती है।

विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत के विरुद्ध गत कुछ समय से विभिन्न अख़बारों में वस्तु स्थिति से भिन्न बयान दिए जा रहे हैं और यह प्रोपेगण्डा किया जा रहा है कि नऊज़ु बिल्लाह अहमदिया मुस्लिम जमाअत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन नहीं मानती है और इस कारण से जमाअत अहमदिया को इस्लाम के दायरे से बाहर किया गया है।

अख़बारों में प्रकाशित होने वाले ये आरोप सर्वथा ग़लत और निराधार हैं। अहमदिया मुस्लिम जमाअत पूर्ण ईमान, विश्वास और पूर्ण मारिफ़त (अध्यात्म ज्ञान) से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमुलन्नबिय्यीन मानती है और इस बात को दिल-व-जान से घोषणा करती है कि क़ायनात के सरदार, मौजूदात के गर्व हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन का जो ताज पहनाया है किस में शक्ति है कि वह आप से यह ताज छीन सके?

ख़ातमुन्नबिय्यीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी की थी कि चौदहवीं सदी में इमाम महदी का प्रादुर्भाव होगा और आपकी सच्चाई के लिए अल्लाह तआला चन्द्रमा और सूर्य ग्रहण के निशान प्रकट करेगा और आँ हज़रत मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़ा ज़ोर देकर यह आदेश दिया था कि जब इमाम महदी प्रकट हों तो उसकी बैअत करो। इस भविष्यवाणी के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने इमाम महदी-व-मसीह मौऊद होने का दावा किया और अल्लाह तआला ने आप की सच्चाई के लिए सच्चे खबर देने वाले आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार 1894 ई. और 1895 ई. में दो बार सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण का निशान प्रकट किया। इसलिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश के पालन में युग के इमाम हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम की अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने बैअत की है और आपकी जमाअत में शामिल है।

*- थोड़ा विचार कीजिए! क्या ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस ताकीदी आदेश पर ईमान लाने के परिणामस्वरूप अहमदिया मुस्लिम जमाअत के सदस्य काफ़िर हैं?

*- क्या ख़ुदा और रसूल के कथनानुसार ईमान के अर्कान पर ईमान लाना एक अहमदी मुसलमान को काफ़िर बनाता है?

*- क्या ख़ाना क़ाबा की तरफ मुँह करके नमाज़ पढ़ना एक अहमदी मुसलमान को काफ़िर बनाता है?

*- क्या अल्लाह तआला की ओर से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार एक दावेदार की सच्चाई में चन्द्रमा एवं सूर्य ग्रहण के निशान तथा अन्य असंख्य ज़मीनी और आकाशीय निशान प्रकट होने के परिणामस्वरूप उस पर ईमान लाना अहमदिया मुस्लिम जमाअत को इस्लाम के दायरे से बाहर करता है?

*- क्या ख़ुदा और रसूल के कथनानुसार इस्लाम के अर्कान पर अमल करना अहमदी मुसलमान को इस्लाम के दायरे से बाहर करता है?

*- क्या क़ुर्आन करीम को प्रकाशित करना और उससे संसार को परिचित कराना एक अहमदी मुसलमान को काफिर बनाता है?

*- क्या क़ुर्आन करीम के 73 देश की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित करना कुफ़्र है?

*- क्या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को शान्ति के पैग़म्बर (दूत) के तौर पर संसार के सामने प्रस्तुत करना अहमदिया मुस्लिम जमाअत को काफिर बनाता है?

*- क्या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन चरित्र का प्रकाशन और आप की सुन्दर शिक्षाओं को संसारा तक पहुँचाना अहमदियों को काफ़िर बनाता है?

*- क्या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वास्तविक अर्थों में ख़ातमुन्नबिय्यीन स्वीकार करना एक अहमदी मुसलमान को काफ़िर बनाता है?

*- क्या यूरोप, एशिया, अफ़्रीका और अमरीका में मस्जिदों का निर्माण करना अहमदी मुसलमान को काफ़िर बनाता है?

*- क्या सम्पूर्ण संसार में इस्लाम का प्रचार करते हुए लोगों को इस्लाम में लाना अहमदी मुसलमानों को काफ़िर बनाता है।

इसलिए सभी मुसलमानों से हमारी दर्द भरी अपील है कि ख़ुदा के लिए विचार करें कि कहीं उम्मत के सच्चे इमाम का इन्कारा करके ख़ुदा तआला और उसके रसूल की नाराज़गी का कारण न बन रहे हों।

जमाअत अहमदिया के प्रवर्तक स्पष्ट शब्दों में अपनी शिक्षाओं का खुलासा इन शब्दों में प्रस्तुत किया है कि ''हमारे धर्म का ख़ुलासा और निचोड़ यह है ''ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह हमारी आस्था जो हम इस सांसारिक जीवन में रखते हैं जिसके साथ हम ख़ुदा के फ़ज़्ल और उसकी दी हुई सामर्थ्य से इस अस्थायी संसार से कूच करेंगे यह है कि हज़रत सय्यिदिना-व-मौलाना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ातमुन्नबिय्यीन-व-ख़ैरुल-मुरसलीन हैं, जिन के हाथ से धर्म पूर्ण हो चुका है और वह नेअमत पूर्णता प्राप्त कर चुकी जिसके द्वारा मनुष्य सद्मार्ग पर चल कर ख़ुदा तआला तक पहुँच सकता है और हम दृढ़ विश्वास के साथ इस बात पर ईमान रखते हैं कि पवित्र क़ुर्आन आकाशीय किताबों का खातम है और एक बिन्दु और उसकी सीमाओं तथा आदेशों से अधिक नहीं हो सकता और न कम हो सकता है।''

पवित्र क़ुर्आन की श्रेष्ठता और आँहज़रत के पवित्र जीवन चरित्र के बारे में अहमदिया मुस्लिम जमाअत की ओर से प्रकाशित ज्ञान तथा इर्फ़ान से भरपूर लिट्रेचर आपकी जानकारियों में आश्चर्यजनक वृद्धि करेगा और मूल वास्तविकता आप पर स्पष्ट हो जाएगी। जिसके लिए टोल फ्री नम्बर 1800-3010-2131 पर तथा वेब साइट www.alislam.org/www.mta.tv पर सम्पर्क करें।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

महत्त्वपूर्ण घोषणा

यदि आप कुरआन के आदेश,आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसलम्म की हदीसों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के साथ-साथ हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला के ख़ुत्बों तथा ख़िताबों से लाभान्वित होना चाहते हैं। आप अपने परिवार और संतान के सुधार के लिए कुरआन की शिक्षाओं को जानने के इच्छुक हैं तो अखबार बदर ज़रूर पढ़ें। अखबार बदर में क्या होता है इसके लिए आवश्यक है कि आप अपनी भाषा में उसका एक नमूना मंगवा कर देखें। अथवा लिखें या फोन करें।

मैनेजर साप्ताहिक अखबार बद्र कादियान नंबर

: + 91-94170-20616

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
Vol. 2 Thursday 23-30 March 2017 Issue No. 12-13

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

महिला टीचर की ज़रूरत है!

नज़ारत तालीम सदर अंजुमन अहमदिया के अधीन शैक्षिक निकायों कादियान में सेवा की इच्छुक महिलाओं की सूचना के लिए लिखा है कि:

(1) उम्मीदवार की आयु 18 वर्ष से अधिक और 37 वर्ष से कम होनी चाहिए। शिक्षा कम से कम 10 + 2 हो और समग्र कम से कम 50 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। अगर 10 + 2 में 50 प्रतिशत से कम हों तो इससे अधिक शिक्षा ग्रेजोईशन या पोस्ट ग्रेजोयशन में 50 प्रतिशत नम्बर होने चाहिए।

(2) 10 + 2 या इस से अधिक शिक्षा के सभी सेमेस्टर और प्रत्येक वर्ष के मार्क शीट व डिग्री तथा इसके बाद शिक्षक प्रशिक्षण व अन्य प्रमाण पत्र हस्ताक्षर की गई कापीज़ आवेदन फार्म के साथ नज़ारत दीवान को भिजावाएँ।

(3) लिखित परीक्षा में सफल होने वाले उम्मीदवार का ही साक्षात्कार होगा। केवल वही उम्मीदवार बतौर शिक्षक सेवा में लिए जाने पर विचार होगा जो केंद्रीय समिति भर्ती कार्यकर्ताओं द्वारा लिए जाने वाली परीक्षा और साक्षात्कार में पास होंगी।

(4) उम्मीदवार की अंग्रेज़ी का स्तर ऊंचा होना चाहिए।

(5) साप्ताहिक बदर में घोषणा के दो महीने बाद परीक्षा की तारीख से सूचित कर दिया जाएगा।

(6) लेखन परीक्षा और साक्षात्कार में सफल होने के बाद उम्मीदवार को नूर अस्पताल से चिकित्सा टेस्ट करना होगा। केवल वही उम्मीदवार बतौर शिक्षक सेवा करने में सक्षम होंगी जो नूर अस्पताल कादियान की मेडिकल रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ और तंदुरुस्त होंगी।

(7) यदि किसी उम्मीदवार की किसी शिक्षिक की आसामी में चुनाव होता है तो इस मामले में उसे कादियान में अपने आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।

(8) यात्रा खर्च कादियान उम्मीदवार के स्वयं के होंगे।

(9) प्रस्तावित आवेदन आसामी टीचर नज़ारत दीवान से मिलेंगे। आवेदन फार्म भर कर आने के बाद नियमों के अनुसार कार्रवाई होगी।

(नाज़िर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान)

समपर्क के लिये: मोबाइल: 09815433760, कार्यालय: 01872-501130
E-mail: nazaratdiwanqdn@gmail.com

☆ ☆ ☆

क्या आप ख़ुत्बा जुम्अ: सुनते हैं?

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज का ख़ुत्बा जमुअ: भारतीय समय के अनुसार शाम 5.30 शाम पर अहमदिया मुस्लिम टेलिवीज़न द्वारा प्रसारित होता है। यह ख़ुत्बा उर्दू के अतिरिक्त संसार की कई भाषाओं में साथ के साथ अनुवाद होता है।

ख़ुत्बा जमुअ: में हुज़ूर अनवर इस्लामिक विषयों , कुरआन हदीस की बातों के अतिरिक्त सामजिक विषयों, मुसलमानों की अवनति के कारण और उस से बचने के मार्ग आदि विषयों पर उपदेश फरमाते हैं एक सच्चे अहमदी मुसलमान के लिए ख़ुत्बा ईमान में वृद्धि का एक प्रमुख साधन है। पाठकों से निवेदन है कि समय पर वह ख़ुत्बा जुम्अ: ख़ुद भी सुनें और अपने दोस्तों को भी सुनाएं ख़ुत्बा जुम्अ: मुस्लिम टेलिवीज़न अहमदिया में देखने और सुनने के लिए इन्टरनेट के माध्यम से www.alislam.org से भी लाभ उठाया जा सकता है।

(सम्पादक)

☆ ☆ ☆

वक्फे नौ के लिए महत्त्वपूर्ण घोषणा

सय्यदना हुज़ूर अनवर के निर्देश के अनुसार अब भारत के वाकफीन नौ की मंज़ूरी का पत्र और संदर्भ नम्बर लंदन से विभाग वक्फे नौ भारत में प्राप्त हो रहे हैं। बाद ही विभाग वक्फे नौ भारत स्वीकृति पत्र और संदर्भ संख्या पिता तक पहुंचाने की कार्रवाई कर रहा है। इसलिए वह माता पिता जो अपने बच्चे को तहरीक वक्फे नौ में शामिल करना चाहते हैं वे अपने आवेदन सीधे सय्यदना हुज़ूर अनवर की सेवा में पूरा पता के साथ फैक्स किया करें और उसकी सूचना फोन या ईमेल द्वारा कार्यालय वक्फे नौ भारत में कर के अपना ई ईमेल आईडी और पता नोट करवा दिया ताकि लंदन से मंज़ूरी का पत्र और संदर्भ संख्या के लिए फार्म आने पर विभाग वक्फे नौ भारत माता पिता तक मंज़ूरी और फार्म जल्दी भजवा सके। इसी तरह संदर्भ संख्या जारी करवाने की लिए भी पत्राचार वक्फे नौ विभाग भारत (नज़ारत तालीम) से की जाए। सीधे वक्फे नौ लंदन की E. Mail आईडी पर कोई मेल नहीं भिजवाई जाए। सारे सैक्टरी वक्फे नौ और माता पिता इस बात का पालन करें। बच्चे के जन्म के बाद फार्म देरी से भिजवाने पर बच्चा तहरीक वक्फ नौ में शामिल नहीं हो पाएगा। इसलिए माता-पिता जन्म के बाद संदर्भ संख्या जारी करवाने के लिए फार्म जल्द से जल्द दफतर वक्फ नौ भारत के नीचे पते पर पोस्ट या E.Mail द्वारा भिजवाएँ।

OFFICE WAQF-E-NAU INDIA (Nazarat Taleem)
Qadian-143516, Dist। Gurdaspur, Punjab
Office: 01872-500975 Mobile: 9988991775
E.Mail: qdnwaqfenau@gmail.com

(इंचार्ज विभाग वक्फे नौ भारत)

इरशाद सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह बिनसरेहिल अज़ीज़

"होश की उम्र में आकर जब बच्चे वाकफीन नौ और जमाअत के कार्यक्रमों में भाग लें तो उनके दिमाग़ में यह सुदृढ़ हो कि उन्होंने केवल धर्म की सेवा के लिए अपने आप को पेश करना है। अधिक से अधिक बच्चों के दिमाग़ में डालें कि तुम्हारे जीवन का उद्देश्य धर्म की शिक्षा प्राप्त करना है। यह जो वाकफीन नौ बच्चे हैं उनके दिमाग़ों में यह डालने की ज़रूरत है कि धर्म की शिक्षा के लिए जो जमाअत के धार्मिक संगठन हैं उसमें जाना चाहिए। जामिया अहमदिया में जाने वालों की संख्या वाकफीन नौ में काफी अधिक होनी चाहिए।"

(ख़ुत्बा जुम्आ 18 जनवरी 2013)

☆ ☆ ☆

तब्लीग़ का विस्तार करो

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो तब्लीग़ का विस्तार करने के संबंध में जमाअत के दोस्तों को समझाते हुए फरमाते हैं:

"तुम भी अगर ख़ुदा तआला से संबंध पैदा करोगे और तहज्जुद और ज़िक्र पर ज़ोर दोगे तो तुम्हारे आसपास के रहने वाले तुम से दुआएं करवाएँगे, तुम्हारी बुज़ुर्गी का प्रभाव उनके दिलों पर होगा। अब तुम में से हर व्यक्ति यह भूल जाए कि वह ज़ैद या बकर है। बल्कि वह यह सुनिश्चित कर ले कि वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़लीफा और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस देश में प्रतिनिधि हैं। इसलिए अपने स्थान को समझो और मुझे ख़ुश खबरियां भिजवाओ कि ख़ुदा तआला ने तुम्हारी ज़ुबानों में प्रभाव दिया है और बहुत अधिक लोग अहमदियत में प्रवेश कर रहे हैं और तुम्हारे ईमानों में इतनी शक्ति दी है कि वित्तीय स्थिति दिन प्रतिदिन सही होती जा रही है और तब्लीग़ का सिलसिला फैल रहा है।"

(सवानेह फज़ले उमर, भाग 4, पृष्ठ 404 से 405)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad